-: चतुर्थ अध्याय :-

रजनी पनिकर के उपन्यासों में चित्रित नारी – जीवन –

	प्रस्तावना –		
१]	ठोकर	–	जुही, मृणाल और नीलू।
२]	पानी की दीवार	–	नीना और करमा।
३]	मोम के मोती	–	माया, माया की माँ, कला, चम्पा, ऐलिस और बिन्दियाँ।
४]	प्यासे बादल	–	रोजशीला, कान्ता और बेला।
५]	काली लडकी	–	रानी, रानी की माँ, कावेरी और चाँदी।
६]	जाडे की धूप	–	भारती और मालती।
७]	एक लडकी दो रूप	–	मनला और माधवी।
८]	तीन दिन की बात	–	शशि और संध्या।
९]	महानगर की मीता	–	मीता, स्नेह और श्रीमती अधिकारी।
१०]	सोनाली दी	–	सोनाली, रानू, ममता और बूढी काकी–माँ।
११]	बदलते रंग	–	आशा, श्रीमती चौधरी और रोशन गुलाबवाला।
१२]	दूरियाँ	–	नमिता, चारु और शीला जी।
	निष्कर्ष	–	

x–x–x–x–x–x

चतुर्थ अध्याय

"रजनी पनिकर के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन।"

प्रस्तावना -

हिन्दी साहित्य में उपन्यास लिखने की परंपरा लाला श्रीनिवास दास के "परीक्षा गुरू" से शुरू हुई है। इस उपन्यास से पहले भी भारतेंदुजीने "नाटक" नामक एक उपन्यास लिखने का प्रयास किया था , लेकिन वे असफल ठहरे। श्रीनिवास दास से लेकर प्रेमचंद युगतक उपन्यास लिखने की गति बहुत कुछ मंद थी। प्रेमचंदयुगीन उपन्यासों में नारी के सामाजिक एवं पारिवारीक समस्याओंको हल करने का प्रयास किया है। इसीलिए प्रेमचंदयुगीन उपन्यासों में "आदर्शोन्मुख यथार्थवाद" का ही रहस्य दिखाई देता है , लेकिन स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में शिल्प, विषय और शैली आदि की दृष्टि से इसमें विविधता पायी जाती है।

आज के उपन्यासोंने सामाजिक जीवन के विविध पहलूओं विविध रूपों और विविध स्तरों पर प्रकाश डाला है। उसी समाज का नारी समाज एक अभिन्न अंग है। यही कारण है कि अपने जन्मकाल से ही हिन्दी उपन्यास नारी जीवन और उसके

विभिन्न समस्याओं के प्रति सजग रहा है। आज के उपन्यासों में नारी के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पारिवारीक, आर्थिक , राजनैतिक , वैचारिक सभी परिवर्तनों , आन्दोलनों और गतिविधियों का प्रतिबिम्ब मिलता है।

नारी तथा नारी का चरित्र पूर्वापार रूप से कौतुहल का विषय रहा है। "नारी" , पति के लिए चारित्र्य , संतान के लिए ममता , समाज के लिए शील , विश्व के लिए दया तथा जीवन मात्र के लिए करुणा आदि की महाप्रकृति है। नरी चित्र-को उजागर करना उपन्यासकार के लिए एक चुनौती है। नारी मनोविज्ञान की कुशल पारखी रजनीजीने इस चुनौती को सहर्ष स्वीकार कर उसमें काफी सफलता अर्जित की है ।

रजनीजी स्वयं नारी होने के कारण उन्होंने नारी के अंतर्मन को छूने का प्रयास किया है। उनके सभी उपन्यास साहित्य नारी प्रधान ही है , क्योंकि सामाजिक बंधनों में बंधी हुई नारी को बाहर लाने का प्रयत्न लेखिकाने किया है। वह नारियों के बारें में कहती है ---

"खासकर स्त्री की भोगी हुई यातनाओं ने मुझे असहय पीड़ा दी है। उनकी विविशताओं पर मुझे आक्रोश आता है , उनकी पराधीनता पर कसमसाई हूँ और उनकी व्यर्थ की धैर्यशीलता मुझे अक्षम्य लगती है।" [१]

इसी परिप्रेक्ष्य में हम रजनीजी के नारी पात्रों का परिचय प्राप्त करेंगे ----

१] <u>ठोकर :-</u>

"ठोकर" उपन्यास में जुही, मृणाल और नीलू के व्यक्तित्व-अंकन का कार्य रजनीजीने किया है। जुही और मृणाल दो ही नारी पात्र प्रभावशाली है। नीलू को श्रीमती रजनीजी ने प्रसंगवश चित्रीत किया है। जुही और मृणाल के माध्यम से दो भिन्न वर्ग और भिन्न स्वभाव की नारियों की सही परिस्थिति पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। दो नारियाँ विशिष्ट वर्ग के होते हुए भी बचपन से एक-दूसरी की सखी है।

१] रजनी पनिकर : दूरियाँ : पृ. : भूमिका।

<u>जुही :-</u>

जुही इस उपन्यास की नायिका है। इसका चित्रण लेखिकाने अतिव खूबी से किया है। जुही के शरिर से चन्दन-सी महक आती है। साँवली-सी, पीली-सी जुही, जिसे देखकर लडके घायल हो जाते है। नम्रता और माधुर्य से भरपूर जुही एक विदुषी महिला है, जो भी उसके संपर्क में आता है, उससे प्रभावित हो जाता है। लेखिका सच ही कहती है ——"जुही, वह तो ठीक जुही की तरह कोमल, ओस की तरह ठंडी, हवा की तरह सुखकर थी।" [१] इसी के पास आते ही हर एक का सकुन हरा हो जाता।

जुही अपनी सखी मिनी के घर रहकर एम.ए. कर रही है। उसके मात-पिता की आर्थिक [illegible] स्थिति इतनी स्वस्थ नहीं थी कि उसे छात्रावास भेज सकें। मिनी को बी.ए. में उसने इतनी सहायता की कि मिनी कृतज्ञतावश उसे रहने के लिए घर ले आई।

इन दोनों सखियों को लेकर कथा बढ़ती है। कथा में मृणाल इर्ष्यालू है, तो जुही संयमी। इन दोनों की विरोधी भूमिकायें कथा में रंग लाती है। लेखिकाने जुही के रूप में एक नम्र, विनयशील, स्नेही, ममतामयी और कल्याणकारी नारी हिन्दी साहित्य को प्रदान की है। बिना स्नेह दिए उससे रहा नहीं जाता और उसके इसी गुण के कारण युवक समुदाय उसे चाहता है। प्रिन्स, कोमल, बसन्त और कथा का नायक अटल भी उससे प्यार करते हैं। और अटल से वह प्यार करती है। अटल दादा तो मानो उसकी पूजा करता है। प्रिन्स का वह आदर करती है। बसन्त के गीत उसे मधुर लगते है। अटल उसे बातों-बातों में "रानो" कहके पुकारता है, जिसे सुनकर मृणाल का हृदय आहत हो जाता है और वह एक आवेग के साथ जुही से घृणा व ईर्ष्या करने लगती है।

मिनी अपनी सखी जुही का द्वेष करने लगी। एक नारी दूसरी नारी का प्रभुत्व कब तक सहन करती रहेगी ——— मृणाल यही सोचने लगी कि जुही को अपने मार्ग से कैसे हटा दे। परंतु उसका अपना भाई अटल उतने ही प्रबल वेग से जुही को हृदय से लगाने के लिए आतुर हो उठता है।

१] रजनी पनिकर : ठोकर : पृ. : १५.

वात्सल्यमयी जुही सदैव दूसरों के गुणों-अवगुणों को और माता की दृष्टि से देखा करती है। और वह अटल के साथ समाज कार्यों में रुचि लेती है, उनके साथ गरीबों के झोपडों में चली जाती है। अटल गुण्डों से बचाई एक लडकी अस्पताल में भरती करवाता है। यह बात सुनते ही जुही तुरंत अटल के साथ अस्पताल जाती है और नीलू की सान्त्वना करती है ——"बहन तुम मुझ अपनी सहोदरा से कम नहीं समझो। मैं भी सदैव तुम्हें अपनी बहन मानूंगी। ——— अटल दादा साधु पुरुष ने सिरपर हाथ रखा है, वह उसे कभी नहीं हटायेंगे।" [१]

जुही का अटल के साथ पीडितों की सेवा करना मृणाल को अच्छा नहीं लगता। वह जुही से कुछ बहुत कटु वचन भी कह देती है, किन्तु जुही का मन ममता से भरा है। वह मीठे बोलों के लिए तरसती है। घर में बसन्त के साथ मृणाल का अवहेलनापूर्ण व्यवहार देखकर वह उसके प्रति सहानुभूति व्यक्त करती है और जहाँ तक हो सके इस चेष्टा में रहती है, कि अपनी सखी का असभ्य आचरण किसी प्रकार पर्दे से ढक सकें। मृणाल की पुरुषों के साथ स्वच्छन्द बातचीत के लिए वह लज्जा अनुभव करती है। जैसे मिनी के कहे गये शब्द प्रिन्स कोमल के लिए ----"लोग तो आयु बढ़ने के साथ असुन्दर होते जाते हैं, परंतु आप निखरते जा रहे हैं।" [२] जुही सुनकर शर्म से पानी-पानी हो जा रही थी।

जुही अपनी सीमा के भीतर रहना जानती है। वह सच्चे अर्थों में भारतीय नारी की सजीव प्रतिमा है।

<u>मृणाल :-</u>

"ठोकर" उपन्यास में यह दूसरा प्रभावशाली नारी पात्र है मृणाल। वह बड़ी सौंदर्यमयी और दर्पमयी नारी है। उसके घर में पिता के मुन्शीजी का बेटा बसन्त भी रहता है। पिता और मुन्शी की मृत्यु के पश्चात अटल भाईने ही मृणाल और बसन्त को पालापोसा है। मिनी बसन्त को मुन्शी का बेटा होने के नाते हीन समझती है। अटल चाहे उसे कितनाही मान, आदर, स्नेह क्यों न दे। फिर भी कई बार कटु वचनों से या अवहेलनापूर्वक व्यवहार से उसने बसन्त का मन तोड

१] रजनी पनिकर : ठोकर : पृ. : ४७.

२] वहीं : पृ. : ३४.

दिया है। बसन्त तो जैसे मृणाल को देखकर अभिभूत हो उठता है। तो लेखिका कहती है -------"उसके सामने सदैव मृणाल रहती, वह नतमस्तक हो जाता। चिल-चिलाते दोपहर के सूर्य के आगे भला वह कब तक ठहर सकता था।" [1] ऐसी गर्व से भरी थी मृणाल। जिसने बसन्त के सच्चे प्रेम को ठुकरा दिया। धन और संपदा के नशेने उसे अंधा कर दिया था। वह प्रिन्स कोमल के पीछे-पीछे जाती है, उसे पाने की चेष्टायें करती हैं। उसकी इतनी चिरौरी करती है कि जुही मृणाल के वचन सुनकर लाज से गड जाती है कि जैसे ----"प्रिन्स आज तो कर्नल वाइल्ड, हॉली वुड के हीरो को पीछे छोड रहे हो।" [2]

कोई भी भारतीय नारी इतने खुले शब्दों में पर पुरुष की सुन्दरता का बखान नहीं करती। मिनी तो जैसी इस कार्य के लिए बनी ही थी। प्रिन्स का प्रेम नहीं मिला तो सुधीर के पीछे भागी। सुधीरने छोड दिया तो मोटार-कार वाले लडकों के पीछे भागी और बसन्त की अवहेलना की। उसकी दृष्टि में प्रेम का कोई मूल्य नहीं। मिनी सुन्दर है, परन्तु उसका प्रयोग वह गलत ढंग से करती है। जब वह पराजित होती तब अपना शरीर और मुख दर्पण में निहारती। अपने शरीर के स्टाव में उसे कोई कमी दिखाई नहीं देती। वह मन ही मन सोचती है कि रंग दूध-सा गोरा, आँखे विशाल और तिरछी, मैक्स फैक्टर [लाली] रोजश मखखन में सिंदूर का काम देती है। मृणाल नाम भी अच्छा है -- यह सोचकर वह मन में निश्चय कर लेती है कि अब की बार नया प्रयोग करूँगी। सब जुही की ओर क्यों झुकते है -----"सुन्दरी उर्वशी ने विश्वमित्रा की तपस्या भंग की थी। मैं अपनी शक्ति का भली प्रकार से प्रयोग करूँगी।" [3]

... नारी मृणाल और सुन्दरी मृणाल का तर्क सदैव चलता रहता। वह ईर्ष्यावश अपने साथ बहुत-सी बाते करती और जुही को अपने घर से हटाने के लिए अटलदादा को नीलू से विवाह कर लेने के लिए आग्रह करती है। परंतु अटलने जुही को ही अपना बना लिया है, नीलू से वह कैसे अपना सकते ? तब उसे धक्का लगता है कि उसका अपना भाई भी उसके शत्रु से प्यार करता है। प्रिन्स नीलू के साथ विवाह की घोषणा करता है। तो सुधीर भी उससे पल्ला छुडाना चाहता है। वह सोचती

१] रजनी पनिकर : ठोकर : पृ. : १६.

२] वही : पृ. : ३३.

३] वही : पृ. : ४४.

है ---"मृणाल की पराजय ------ क्या भगवानने उसे इतना सुन्दर , अमीर , सुकुमार पराजय का स्वागत करने के लिए बनाया है। नहीं ऐसा कभी नहीं होने देगी नारी सुलभ सब अस्त्रों का प्रयोग करूँगी।"[१] और वह सभी अस्त्रों का प्रयोग करती है किन्तु सभी ओर से मुँह की खानी पडती है। उसका स्वभाव उसके सौंदर्य और संपत्तिपर विजय प्राप्त करता है। अंत में जुही और अटल दादा के मिलन के बाद वह बसन्त से पूछती है ---"अब हमारी बारी कब है ? बसन्त ने दृढता से उत्तर दिया - "शायद कभी नहीं"?" [२]

नीलू :-

प्रस्तुत उपन्यास में इस पात्र की उपस्थिति बहुत कम स्थलोंपर है। नीलू एक मरीज के रूप में हमारे सामने आती है , जिसे अटल दादा अॅपेन्डिसाइड से बचाकर अपने घर लाता है। वही नीलू जुही की सखी बनती है। मृणाल जब जुही की ओर पुरुषों का लगाव देखती है और उसका अपना भाई भी जुही की ओर झुकता हुआ देखती है तब वह नीलू के साथ अटल का विवाह करना चाहती है। परंतु [illegible] नीलू का विवाह प्रिन्स के साथ तय हो जाता है। इस तरह नीलू के चरित्र का चयन लेखिकाने कथा के विकास के लिए और अटल के समाज कार्य को बढ़ाने के लिए किया है। ऐसा कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि लेखिकाने आधुनिक विशिष्ट वर्ग की नारी के पहलूओं को उजागर करने का प्रयास किया है और स्त्री के मनोविज्ञान का मृणाल द्वारा इतना सजीव चित्रण किया है कि मन अभिभूत हो उठता है।

२] पानी की दीवार :-

"पानी की दीवार" इस कृति में लेखिकाने उच्च-शिक्षित युवतियाँ भी कैसी जटिल समस्याएँ खड़ी करती है और अपने द्वारा ही खड़ी की गयी समस्याओं किस प्रकार सुलझाती है। उसका बडी मनोज्ञता से चित्रण किया है। इस उपन्यास में नीना एक विशिष्ट वर्ग का नारी पात्र है तो करुणा साधारण भारतीय नारी की बनती-संवरती नारी का प्रतिरूप है।

१] रजनी पनिकर : ठोकर : पृ. : ३३.
२] वहीं : पृ. : १०२.

नीना :-

"पानी की दीवार" इस उपन्यास की नायिका नीना है। वह पढ़ी-लिखी है और चित्रकार भी है। उसकी शिमला कालेज में चित्रकला सिखाने के लिए नियुक्ति होती है। उसका बचपन का साथी राजकुमार है। राज के साथ उसकी मंगनी भी हो चुकी है। परंतु राज विदेश गया हुआ है। हर पल वह नीना के मन मस्तिष्क में बसा हुआ है। नीना उसे पत्र भी लिखती है। राज की प्रतिक्षाने नीना को कोमल, संवेदनशील और भावुक बनाया है। राज की प्रतिक्षा वह आजीवन कर सकती है।

शिमला आने के बाद नीना का भावुक मन दिलीप की ओर आकर्षित होने लगा। दिलीप चौधरी शिमला कालेज में अध्यापक है और प्रधान अध्यापक की अनुपस्थिति में वह प्रधान-अध्यापक का काम कर रहा है। दिलीप सबल और दार्शनिक व्यक्तित्व का स्वामी है। अब उसका व्यक्तित्व एक चुनौती बनकर नीना के सामने खड़ा हो गया। जिस तरह बचपन में राज का सबल, उद्दण्ड और उद्वेग भरा व्यक्तित्व उसे आकर्षक लगा था, उसी तरह दिलीप का आकर्षण उसके मन में बढ़ने लगा। दिलीप का व्यक्तित्व नीना के अस्तित्व को निगलता नहीं अपितु कर्म के लिए प्रेरित करता है।

दिलीप के बारे में नीना का मन संघर्ष और द्वन्द्व में पड़ जाता है। वह मन को लाख समझाती है किन्तु स्त्री का पुरुष के प्रति आकर्षण एक प्राकृतिक वस्तु है, जिसे नीना जैसी नारी रोक पाने में असमर्थ है ———"यह दिलीप क्यों मेरे साथ खिलवाड़ कर रहा है। इसकी पत्नी है, बच्चा है ———मैं क्यों बुद्धू बन रही हूँ। क्या मैं दिलीप के साथ संपर्क नहीं छोड़ सकती।" [1] दिलीप को भी मालूम है कि नीना राज से प्रेम करती है और उसका मंगेतर भी राज है। दिलीप सामाजिक मर्यादाओं को नहीं तोड़ सकता। वह शादी-शुदा एक बच्चे का बाप है, इसी लिए वह नीना से दूर रहना चाहता है।

नीना के मानसिक द्वन्द्व का आकर्षण यह भी है कि जब-जब वह दिलिप से बातें करती है, मन और मस्तिष्क में राज की कल्पना साकार हो जाती है। अनजाने में वह दोनों की तुलना करती है। वह दिलीप से जब भी मिलती है तब राज एक पल के लिए भी दूर नहीं होता। वह कहती है ———"दिलीप की आँखे मुझे राज की

१] रजनी पनिकर : पानी की दीवार : पृ. : ४२.

याद दिलाती। राज का अहम कुछ चंचलता और उत्सुकता लिए हुए था और दिलीप का विषाद से घिरा हुआ।"[1]

दिलीप की ओर झुकने का दूसरा कारण राज का सबल, उद्दण्ड और कर्मठ व्यक्तित्व नीना के व्यक्तित्व को अपने में लय करता था। किन्तु दिलीप का व्यक्तित्व उसे कर्म के लिए प्रेरित करता है, अपने में लय नहीं करता। फिर भी राज का अस्तित्व वह भूला नहीं सकती। वह कह उठती है ————"राज, तुम्हारी जगह मैं दिलीप की मुस्कानों पर नाचती हूँ। मैं जोन आफ आर्क न बन सकी, राज! पर ————पर मैं क्या बनने जा रही हूँ! मैं किधर बह रही हूँ! दिलीप का अहम्! ओफ! इस अहम् से मुझे घृणा है। "सेसिल" में बैठे हुए बड़े ठाठ से हुक्म चला दिया था लाट साहब ने, तुम केशव के साथ मत नाचो। ————भला मैं क्यों मान गई।"[2]

नीना दिलीप के बारे में सब कुछ जानती है कि दिलीप की पत्नी करुणा है, उसे एक सन्तान भी है। और वह उसी को छोडकर मेरा दामन नहीं पकड सकता। फिर भी "मैं उसके बारें में इतना क्यों सोचती हूँ।" यही नीना के मन-मस्तिष्क की सबसे बड़ी दुर्बलता है।

नीना, दिलीप और करुणा के साथ "सेसिल" होटल पहाड़ी मैले में घूमने-फिरने जाती है। उसीके साथ मशोबरा भी जाती है तो उसका अंतर्मन कहता है ————"मशोबरे के डाकबंगले में आए हम दो दिन ही चुके थे। इन दोन दिनों में मुझे इस बात का ज्ञान हो गया कि दिलीप में और मुझमें कितना व्यवधान है, मेरे और उसके बीच मर्यादाओं की ऐसी कितनी दीवारे हैं, जिनका तोडना न मुझ से हो सकता है न उससे।"[3]

नीना का दिलीप के साथ हर वक्त मिलना-जुलते रहनाउसकी सखी दिलीप की पत्नी करुणा के मन में आशंकायें पैदा करता है। नीना ने इस तथ्य को समझ लिया, तब उसने करुणा की आशंका को मिटा डाला। राज का चित्र निराकार

१] रजनी पनिकर : पानी की दीवार : पृ. : ७९.

२] वही : पृ. : ८४.

३] वही : पृ. : १२३.

उसके हाथ में दे दिया कि कहीं दिलीप और करुणा के संबंध उसी के कारण बिगड़ न जायें। इसके पीछे अपना कोमल और संवेदनशील मन ही है। वह करुणा की पति छीनना नहीं चाहती भले ही मन ही मन वह उससे प्यार करती हो।

नीना ने एक परंपरा से चली आई मर्यादाओं का पालन किया है। अपने प्यार को मन ही मन दबाकर उसने सामाजिक सीमाओं के आगे अपना माथा झुका दिया है।

करुणा :-

करुणा "पानी की दीवार" उपन्यास का दूसरा नारी पात्र है। वह नायक दिलीप की पत्नी है फिर भी इसे हम प्रभावशाली नहीं कह सकते। क्योंकि करुणा का चरित्र केवल कथा को प्राणवान बनाने का साधन मात्र है। उपन्यास की कथा में स्थिति की गम्भीरता एवं जटिलता को प्रदर्शित करने के लिए ही करुणा की उपस्थिति है। करुणा नायक की पत्नी है इसी कारण नायक स्वतंत्र नहीं, वह बंधा है सामाजिक मर्यादाओं से। करुणा की उपस्थिति उसे स्वेच्छा से आचरण करने नहीं देती।

करुणा और दिलीप के सम्बन्ध ऐसे है जैसे दोनों विभिन्न विश्वासों के विभिन्न क्षेत्र के प्राणी हों। वैसे तो उन दोनों में पारस्परिक सौहार्द है ——— कहीं कोई संघर्ष नहीं है। परंतु दोनों में कोई निकटता दिखाई नहीं देती। दोनों इस वर्तमान समाज के प्राणी है जो मशीन की भाँति काम करते है, सामाजिक व्यवहार में पटु है। मन की दूरी को या तो समझते नहीं और समझते है तो प्रकट नहीं करते। करुणा को जहाँ आमोद-प्रमोद, चहल-पहल पसंद है, वहाँ दिलीप एकान्त प्रिय है क्योंकि वह कलाकार है, दार्शनिक है।

अत: हम कह सकते है कि करुणा एक साधारण भारतीय नारी की भाँति पति का साथ निभाने की चेष्टा करती है। तो नीना अपनी मर्यादाओं के घेरे में है। नारी का परंपरागत मर्यादाओं और संस्कारों से संबंधित है, चाहे उसमें उसकी अपनी आत्मा ही जलकर स्वाहा हो जाये। परंपरागत संस्कारों और मर्यादाओं को नारी समझाबुझाकर तथा अपनाकर जीवन यापन करें, यही लेखिका का दृष्टिकोण है।

३] मोम के मोती :-

इस उपन्यास में लेखिकाने माया को नायिका बनाया है, जो निम्न-मध्यवर्ग की नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। इसके अलावा और भी कुछ नारी पात्र है जैसे — माया की माँ, उसकी सखी कला, ऐलिस, चम्पा और बिंदियाँ। रजनीजी का यह पहला उपन्यास है, जिसमें उसने नौकरी पेशा-नारी की समस्याओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। यद्यपि यह प्रयास अत्यल्प होकर भी प्रशंसनीय है।

मायाः :-

"मोम के मोती" इस उपन्यास की नायिका माया एक ऐसी नारी का चित्र है, जो निम्न-मध्यवर्गीय समाज में उत्पन्न होकर भी साहसी है। उसने अतीव कठोरतासे सामाजिक रूढ़ियों की शृंखला को तोड़कर फेंक दिया है। पिता की मृत्यु हो जाने से घर की स्थिति अति शोचनीय हो जाती है। तो माया कहती है ———"थाली में रोटी रखकर माँ बैठती, तो बच्चों को झुठलाती रहती। मानो एक रोटी पन्द्रह मिनट तक खाती रहेगी। माया का छोटा भाई और बहन सो जाते, केवल माया उस समय यह देखती। ————माया का मन समाज की झूठी शृंखलाओं के खिलाफ विद्रोह कर उठता है। वह उन लोगों से भी गये बीते थे, जो सर्वसाधारण के सामने भिक्षा तो माँग सकते हैं। माया और उसके परिवारवाले निम्न-मध्यवर्गीय समाज की मर्यादा बनाये रखने के लिए अपनी भूख का बलिदान करते।"[१]

ऐसी हालत में अपनी आर्थिक स्थिति से छुटकारा पाने के लिए माया अम्बला से देहली आ जाती है। देहली में वह सेठ धनपति के यहाँ एक सौ चालीस रुपये की नौकरी करती है। कड़े परिश्रम और इमानदारी से प्रभावित होकर सेठ उसकी पदोन्नति कर देते है। और बदले में माया का हाथ पकड़ते है, तभी माया बड़े कौशल से उनका ध्यान बँटा देती है। ऐसे जीवन से माया का मन उब जाता है ——— "उसके मन में एक अजीब प्रकार की ग्लानि भर उठी थी। उसके मन में एक बार आया,

---

१] रजनी पनिकर : मोम के मोती : पृ. : ४९

साथ वाली खिड़की में से छलांग लगा दे, इस जीवन का अंत कर दे, जिसमें केवल कृत्रिमता है, जहाँ वास्तविकता का नाम नहीं।"[१]

माया दायित्व समझनेवाली विचारशील युवति है। वह कर्तव्यपरायण और साहसी भी है। माया सेठ के फर्म की एक विश्वस्त कर्मचारी है। फर्म के लिए नित्य नये-नये काम लाती है। अपने कार्य की धाक के बलपर ही वह सेठ से अपना कौमार्य सुरक्षित रख पाई है। उसके चरित्र के इस अद्भुत गुण के कारण ही हमारी श्रद्धा का पात्र बन जाती है। पाठक उसके साहस और कौशल से अभिभूत हो जाते हैं।

माया नारी है —— उसके मन में भी नारी सुलभ इच्छाएँ, आकांक्षाएँ हैं, घर-गृहस्थी के सपने हैं। परंतु वह सभी ख्वाबों को मन-ही-मन दबाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करती है। वह कहती है ——————"मैं पत्थर की नहीं बनी, मधु। मैं भी हाड-मांस की बनी हूँ। मेरा भी दिल धड़कता है। परंतु मेरी भावनाओं का, आकांक्षाओं का कोई मुल्य नहीं। वैसे ही जैसे पथपर बैठने वाली भिखारिन महल के स्वप्न देखें, तो मिट्टी में मिल जाएँ।"[२]

धीरे-धीरे माया की नारी सुलभ भावनायें मिटने लगी हैं। वह मैनेजर कबाड के साथ घूमती-फिरती है। किन्तु कबाड शादी-शुदा आदमी है, वह अपने मन बहलाने के लिए माया के पास आता है। तो माया उसे कहती है —— ——"लगातार नौकरी करने से नारी जीवन की आत्मसत्ता जाती रहती है। नारी हृदय की कोमल वृत्तियों का नाश हो जाता है। दिन-रात अफसरों की खुशामद और आफिस के सहकार्मियों की त्रुटियाँ पकड़ने की धुन में रहते-रहते मन की कोमल भावनाएँ विदग्ध हो जाती है।"[३]

माया स्वयं को इस संसार में बहुत अकेला पाती है। चारों ओर देखती है, मित्र-परिचित व्यक्ति बहुत हैं, किन्तु मन की बात जाननेवाला अंतरंग मित्र कोई नहीं है। उसे अपनी सखी कला के जीवन से ईर्ष्या हो जाती है। जिसने

१] रजनी पनिकर : मोम के मोती : पृ. : ५६.

२] वही : पृ. : ९९.

३] वही : पृ. : ९४.

बचपन से कभी दुःख, कष्ट, अभाव देखे तक नहीं थे। वह देखने में भी सुन्दर है और उसका विवाह उसके बचपन के साथी डाक्टर सुधाकर से हो चुका है। ऐसे में ----------"माया का मन भगवान से बदला लेने को उतावला हो उठा। उसका जी चाहा, ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर कहे, भगवान तू है कहाँ मैं तुम्हे देखना चाहूँगी, मुझसे जो उपहास किया है तुमने, दुनिया में भेजा भी तो न रूप न रुपया। किसी को आँखे दिखाने की चिन्ता है, तो किसी को त्यौरियों की।"[1]

कथा के अन्त में माया राजन से मिलती है। राजन उसे अपने स्वप्नों का शहजादा लगता है। जो उसी के वर्ग में, उसी की भाँति उन्नति कर उच्च-मध्यवर्ग में आया है। दोनों एक-दूसरे को भली-भाँति समझते है। माया बहन की शादी कर चुकी है और भाई को नौकरी विदेश में लगवा दी है। इसलिए अब वह राजन से शादी करके अपनी घर-गृहस्थी बसाना चाहती है।

इस उपन्यास में माया की कथा एक कर्मशील नारी की कथा है। जिसका जीवन बाहर से मोम के मोती की तरह चमकता है, किन्तु यथार्थ में उसका जीवन शोभारहित है, संघर्ष से भरा हुआ है।

<u>माया की माँ :-</u>

माया की माँ विधवा है, निर्धन है। वह पुराने ढंग की भारतीय स्त्री है। पढ़ी-लिखी नहीं है, मध्यवर्ग की है। इसलिए मजदूरी क्या भीख भी माँग नहीं सकती। घर की स्थिति शोचनीय होते देख असमय में ही माँ के झुके कन्धे और भी, झुक गये है। पडोस वाली सरला की माँ दिन में चार बार छोटी-सी दीवार फाँदकर पूछेगी ----------"माया की माँ आज क्या दाल सब्जी बनाई है ? और उसी साँस में पूछेगी ---- माया के लिए कोई लडका मिला ?"[2]

माया जब देहली कमाने चली गयी तब भी लोग व्यंग्य की बाते माया की माँ को सुनाते रहें। छोटी बहन [छाया] की शादी में माया घर आती है, तो यही सरला की माँ पुछती है ---"माया की माँ आ गई तुम्हारी कमाई करनेवाली लडकी ?

१] रजनी पनिकर : मोम के मोती :पृ. : ७५.

२] रजनी पनिकर : मोम के मोती : पृ. :११७.

स्वर में तीर की तरह चुभनेवाला व्यंग्य रहता है। एक विधवा ऐसे व्यंग्य वचन सुनकर मौन रहने के सिवाय और क्या कर सकती है ? वह छाया के विवाह के बाद माया के पैर पकडकर कहती है ———"मेरी बच्ची यह छाया का भार मेरे सिर से केवल तुमने उतरा , नहीं तो कौन करता ? मैं तो बिलकुल अपाहिज हूँ। भगवान तुम्हे सुखी रखें।" [1] वह स्वयं को अपराधी समझती है , क्योंकि बड़ी बेटी के रहते छोटी का विवाह हो गया।

माया की माँ एक विवश व साधनहीं विधवा नारी है। उसका बडा मार्मिक चित्रण लेखिकाने किया है , जो पाठकों की संवेदनाओं को आंदोलित करने में सफल हुआ है।

<u>कला :-</u>

कला इस उपन्यास की नायिका माया की सखी है। वह डॉक्टर है , उच्चमध्यवर्ग में उत्पन्न हुई है ———इसी कारण उसके जीवन में दुःख , कष्ट तथा अभाव का नाम तक नहीं है। दिल्ली में सुधाकर से उसका प्रेम हो जाता है और माया की सहायतासे वह सुधाकर के साथ विवाह भी कर लेती है। कला और माया दोनों एक-दूसरे को बहुत चाहती है। कला आदर और स्नेहवश माया को जीजी कहती है। वह विवाह के उपरान्त अपनी पुरानी गाडी माया को दे देती है।

कथा के अंत में सुधाकर कला को छोडकर चम्पा के साथ बम्बई भाग जाता है। माया कला को इस बात का पता नहीं लगने देती और सुधाकर को भी कला के पास लौट जाने की सलाह देती है। इस प्रकार कला स्नेह देती है , तो भरपूर स्नेह पाती भी है।

<u>चम्पा :-</u>

चम्पा कश्मीर से भगाई हुई हिन्दु लडकी है , जिसे भारत के सैनिक पाकिस्तान से छुडाकर आश्रम ले आते है। कला वहाँ डॉक्टर है , अतः चम्पा की देख-भाल बड़े

१] रजनी पनिकर : मोम के मोती : पृ. : ११८ और ११९.

मनोभाव से करती है। किन्तु यही चम्पा जब कला गर्भवती होकर प्रसवकाल के लिए मायके जाती है, तो कला के पति के साथ बम्बई भाग जाती है। वहाँ दोनों कुछ दिन ठीक रहते हैं, फिर सुधाकर कला के पास लौट आता है और चम्पा बम्बई में वेश्या वृत्ति को अपनाने के लिए बाध्य हो जाती है। चम्पा का चरित्र उन शरणार्थी महिलाओं की स्मृति सजीव कर देता है जिन्होंने पाकिस्तान बननेपर अपना जीवन बलिदान किया है। परिस्थितियाँ इसे वेश्या बनाने को बाध्य करती हैं। पाठक का मन चम्पा के लिए सहानुभूति से भर उठता है। यह लेखिका की सफलता है।

ऐलिस :-

ऐलिस एक एंग्लो इण्डियन लड़की है। जो जॉन की बातों में आ जाती है। जॉन उससे विवाह का प्रण करता है, किन्तु उसे कभी पूरा नहीं कर सकता। वह गर्भवती है ——कला इसकी देखभाल करती है और समय आनेपर माया उसे अस्पताल पहुँचा देती है। माया ऐलिस को यदाकदा सहायतार्थ कुछ रुपये भी देती है, रुपये न हो तो आभूषण ही देती है। परंतु ऐलिस और जॉन मिलकर सब की शराब पी जाते हैं। एलिस फिर भी जॉन का नाम रटती रहती है और उसकी प्रतिक्षा करती है।

बिन्दियाँ :-

बिन्दियाँ माया और कला की दासी है। उसका पति मेहतरानी के साथ भग जाता है। तब भी वह उसी के लिए चिन्ता लेकर बैठती है कि कहीं उसे इस अपराध के लिए दण्ड न मिले। धीरे-धीरे समय गुजरने के साथ वह उसे भूलने लगती है और माया के कहनेपर एक चौकीदार से विवाह कर लेती है। बिन्दिया एक विश्वस्त दासी है जो माया और कला का काम कड़ी मेहनत, श्रध्दाऔर आदर से करती है।

बिन्दियाँ एक भारतीय नारी है जो पति के अमंगल की कामना नही कर सकती चाहे पति उसका कितना भी अनिष्ट क्यों न करें। वह कमा कर लाती भी है और पुरुष का शोषण सहती भी है।

निम्न मध्यवर्ग की नारी कितनी कर्मशील और सहनशील है यही बिन्दियाँ के चरित्र से लेखिकाने दिखाया गया है।

इस उपन्यास में लेखिकाने श्रमिक वर्ग और अभिजात वर्ग की समस्याओं को प्रस्तुत किया है। आजकल नौकरी करनेवाली स्त्रियों की समस्या को पुरुष समाज ही जटिल बना देता है। पुरुष वर्ग नारियों से संपर्क रखता भी है तो केवल उन्हें भोग्या समझकर। जब उसका उद्देश्य सफल नहीं हो पाता तब वह झुंझला उठता है और इसी झुंझलाहट के कारण वह उसपर कलंक लगाना भी नहीं चुकता। उसकी बड़ी बेहरहमी से अवहेलना करता है। पुरुष की अवहेलनासे नारी टूट जाती है।

४) प्यासे बादल :-

इस उपन्यास में रोजशीला, कान्ता और बेला यह तीन नारी-पात्र आते हैं। लेकिन यह पुरा उपन्यास रोजशीला के इर्द-गिर्द घुमता हुआ दिखाई देता है। रोजशीला भिखारी वर्ग की लडकी है। उसे लेखिकाने इस उपन्यास की नायिका बनाया है। हिन्दी साहित्य में यह रजनीजी का पहला कदम है कि उन्होंने एक आवारा, निराश्रित तथा भिखारी वर्ग की युवति को नायिका बनाया है।

रोजशीला :-

"प्यासे बादल" इस उपन्यास में रोजशीला भिखारी वर्ग की लडकी है, जो आश्रयहीन है। सडकोंपर घूमती है, पुल या किसी बड़े पेड के नीचे रहती है। उसकी माँ मसीही धर्म को मानती थी, वह एक धनी परिवार में आया थी। जब वह स्कूल में पढ़ती थी उसी समय माँ की मृत्यु हुई। माँ मर जाने से शीला बेसहारा होकर सडकोंपर आ गई। वह सिगारेट के टुकड़े बीनकर पी लेती, कुत्ते की प्लेट से रोटी उठाकर खा लेती है। शीला की यह दीन-दशा देखकर जयंत उसे अपने घर में पनाह देता है।

इसी रोजशीला को लेकर कहानी चलती है। जयंत के आश्रय में वह एक जंगली लडकी से सुसभ्य-सुसंस्कृत महिला में परिवर्तित हो जाती है। पहले उसका स्वार्थ ही सब कुछ था, बाद में त्याग, सेवा और बलिदान की प्रतिमूर्ति हो गई। उसके भीतर

विद्रोह के बदले ममता, त्याग और सेवा प्रतिष्ठित होने लगी। वह स्वयं को बड़ी सौभाग्यशालिनी समझने लगी। क्योंकि उसे जयंत जैसे सच्चे पुरुष का प्यार मिला है, तो शीला ने भी अपनी समूची आत्मा का प्रणय प्यार सेवा, विश्वास सब जयंत के चरणोंपर समर्पित किया। नर्सिंग की ट्रेनिंग लेने जयन्त ने स्वयं उसे अस्पताल भेजा परंतु फिर उसके मन में आशंका ने घर किया कि डिप्लोमा मिल जाने से शीला घर से चली न जाये। तो जयन्त कहता है ———"क्या करोगी डिप्लोमा लेकर"

"कभी काम आयेगा।" जयंत कुछ सोचता रहा "तुम्हें विश्वास नहीं हम लोगों पर।"[1]

जयंतपर पूरा भरोसा और विश्वास रखकर शीलाने अस्पताल जाना छोड दिया। उसे तो जयंत के सहारे के आगे सभी सहारे तुच्छ प्रतीत होत है ——— "जयन्त ने एक हाथ से वायलिन पकड़ा और दूसरे हाथ से रोजशीला को सहारा दिया। रोजशीला की मांसल देह को अपनी बाँह का सहारा देकर जयन्त को ऐसा लगा मानों उसका पुरुष सार्थक हो गया हो। शीला स्वयं जैसे धरतीपर नहीं, मखमल के गलीचे पर चल रही थी। उसे अपने भाग्यपर विश्वास नहीं हो रहा था। कहाँ वह लोगों को मारपीट कर खाना चुराती थी और कहाँ जयन्त उसे सहारा दिए चला जा रहा था।"[2]

रोजशीला जयन्त के अपाहिज भाई की सेवा जरूरत से जादा करने लगी, तो बलराज उससे प्रेम करने लगा। शीला अपने प्रति एक उदासीन भाव लिए कार्यरत रहती है\
उदासीन होते हुए भी इतनी सुन्दर दिखती है,
कि जयन्त की दूर की बहन कान्ता उसे देखकर सोचती है ————"इस लडकी का रंग जरूर सांवला है, लेकिन क्या आब है, क्यों सलोनापन है। इस सांवले रंग में ऐसे खुबसूरत चमकिले दांत शानदार भौं हैं। ऐसी गोल भरी हुई गर्दन, फिर यह चौकडियाँ भरता हुआ यौवन। शीला की सुंदरता के कारण कान्ता मन ही मन ईर्ष्या करने लगी-किन्तु शीला को अपने रूप यौवन का घमण्ड कतई नहीं है। वह जो अपने लिए "चरणरज"का शब्द ही प्रयोग करती है। वह जयन्तबाबू की जीवन

1] रजनी पनिकर : प्यासे बादल : पृ. : ४७.

2] वहीं : पृ. : ७२.

संगिनी बनकर उसकी सेवा करना चाहती है, किन्तु उससे पहले उसके पहले उसका बलराज के साथ शादी का प्रस्ताव जयन्तबाबू शीला के सामने रखते है। तब शीला कहती है ——————"जयंतबाबू चरणरज का तिलक शोभा नहीं देता, मैं आपकी सदैव पुजा करती रहूँगी, आपका सौंपा हुआ काम भी करती रहूँगी।" [1]

इन्हीं शब्दों में उसके जीवन का तप, त्याग, बलिदान और स्वभाव की दृढ़ता मुखर हो उठती है। जब वह मन ही मन नाराज हो जाती है तब वायलिन बजा लेती है। जब वहब बहुत दुःखी होती तो वायलिन की तारों से खेलकर अपना मन हल्का कर लेती है। परंतु अपने पथपर अडिग रहकर जयन्त के मार्ग का विघ्न बनना नहीं चाहती।

शीला में प्रतिशोध की भावना थी है। जयंत की पत्नी बेला और कान्ता ने सदैव उससे ईर्ष्या की और घृणा की दृष्टि से ही देखा। परंतु उसने बेला की मृत्यु के उपरान्त उसकी बच्ची को बड़ी ममता से गले लगा लिया। कान्ता की भी उसने कभी अवहेलना नहीं की। शीला में इतने सारे गुण पाकर अंत में जयंतबाबू कह उठते है ——————"ओह तुम्हारी यह अच्छाई, यह नम्रता सब मुझे समाप्त कर देगी कभी-कभी मुझे लगता है मैं पागल हो जाऊँगा। मैं पूछता हूँ तुम बुरी क्यों नहीं हो सकती।" [2]

सच-मुच संपूर्ण उपन्यास में रोजशीला एक उन्नत चरित्र है, एक आदर्श भारतीय नारी है।

कान्ता :-

कान्ता जयंत के परिवार में दूर के रिश्ते की बहन के नाते रहती है, जो पति को छोडकर जयन्त के घर आ गई है, कान्ता बचपन से ही जयन्त के भाई बलराज को राखी बाँधती है। परंतु जयंत को वह मन ही मन मित्र समझकर प्यार करती है। जयन्त से वह आयु से बड़ी है, इसी कारण जयंत उसे दीदी कहता है। कान्ता घर का कारोबार भी सँभाल लेती है। किन्तु रोजशीला और बेला घर में

१] रजनी पन्निकर : प्यासे बादल :पृ.:१६६.

२] वही : पृ. :२३६.

आने के बाद शीला के प्रति जयंत को प्रभावित होते देखकर उसका मन ईर्ष्या से जल उठता है।

कान्ता के चरित्र-चित्रण से आधुनिक समाज में फैली एक भयंकर समस्या की ओर भी लेखिका का संकेत है। बड़ी आयु की अतिशिक्षीत लड़कियाँ विवाह के बाद भी अपने पति से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाती। वर्षों स्वतंत्र रहकर प्रचंड अहं को खाद-पानी मिलता है। किसी के सामने झुकने में उसका प्रचंड अहं आहत हो जाता है कि पति-पत्नी अलग-अलग रहने लगते हैं। परंतु नारी स्वतंत्र रहकर भी सुखी नहीं हो पाती। कान्ता क्या जयंत के घर में सुखी है। वह पति का घर छोड आई है और जयंत के घर में अपना आधिपत्य जमा ा चाहती है। जयंत उसे कई बार कह चुका है कि आप को जज साहब के पास लौट जाना चाहिए ---------"पर शायद तुम एक दिन सब छोडकर जज साहब के पास चली जाओगी।"

"ऐसा न कहो दीदी पति के बिना कितने दिन रहोगी।"

"जितने दिन रह सकूँगी।"

"मेरी तो इच्छा है तुम उनके पास रहो।" [१]

नारी अपने पति के घर शोभा देती है । इस सत्य की ओर रजनी जी ने संकेत किया है। अंत में कान्ता अपने पति के घर लौट जाती है।

कान्ता शिक्षीत समझदार महिला है, परंतु उसके विचार साधारण स्त्रियों के समान है।

बेला :-

बेला नायक जयन्त की पत्नी है। यह विवाह कर्तव्य वश किया गया है, इसलिए जयन्त और बेला में कभी घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाया। बेला दिखने में साधारण-पतली सी नारी है। उसके बारे में लेखिका लिखती है ------ "बेला जज साहब की इकलौती सन्तान है शरीरपर मांस का बिल्कुल अभाव है। केवल हड्डियाँ ही दिखलाई देती है।" [२]

१] रजनी पनिकर : प्यासे बादल : पृ. : ८१.
२] वही : पृ. : २४.

जयंत अपने नाना का दिया हुआ वचन निभाता है और बेला के साथ ही विचरता रहता है। बेला भी इस बात को जानती है। वह शीला से ईर्ष्या करती है। सच तो यह है कि बेला और उनकी माँ बचपन से ही शीला से जलती है, क्योंकि स्कूल की पढ़ाई में शिला उससे चतुर थी।

बेला धनी है और अपने ही घमण्ड में चूर रहनेवाली स्त्री है। यहाँ तक कि वह पति के आगे भी कभी नहीं झुकी। उसका पति जयंत कहता है, बेला का आचरण धनी बाप की बेटियों का है, जो बहुत सा रुपया दहेज में लाती है, किन्तु पति के हृदय के लिए कुछ नहीं लाती वह शून्य का शून्य ही रह जाता है। बेला और शीला के बारे में इतना ही कहा जा सकता है कि ------"एक अभिमान से इतनी [illegible] भरी है कि धरतीपर पाँव नहीं पडते, दूसरी इतनी सीधी है कि प्रेम के, आदर्श के लिए जान हथेली पर रखें है।" [1]

इसी कारण बेला जयन्त के मन को अपने मृत्यु तक छू न सकी।

इस उपन्यास में लेखिकाने रोजशीला जैसी भिखारी वर्ग की लडकी को नायिका बनाकर समाज के सामने एक नया आदर्श रखने का प्रयास किया है। साथ ही साथ कान्ता और बेला जैसी उच्च-वर्गीय नारियों के अत्याधुनिक चरित्रपर प्रकाश डालने की कोशिश की है।

५] काली लडकी :-

इस उपन्यास में काली लडकी के पारिवारिक जीवन का मनोवैज्ञानिक चित्रण रजनीजीने किया है। कथानक की सोद्देश्यता और मौलिकता के बारे में लेखिका कहती है ---------"किसी उपन्यास में किसी काली लडकी की समस्या का वर्णन नहीं किया गया था, किसी ने भी काली लडकी को उपन्यास की हिरोइन नहीं बनाया था। ----------बकिमचन्द्र ने अन्धी लडकी ले ली। रविन्द्रनाथ ठाकूर ने गूँगी लडकी को चित्रित किया, परंतु दोनों में से किसी ने भी यह आवश्यक न समझा कि किसी काली लडकी को भी हिरोइन बनाएँ।" [2] इसी काली लडकी की कहानी इस

१] रजनी पनिकर : प्यासे बादल : पृ. : १२८.
२] रजनी पनिकर : काली लडकी : पृ. : ६४.

उपन्यास की कथा है।

रानी :-

इस उपन्यास की नायिका रानी है। वह गोरी माँ के कोख से काली बनकर जन्म लेती है। इसी कारण उसे माँ का स्नेह नहीं मिल सकता माँ उसे अच्छा भोजन भी खाने को नहीं देती, क्योंकि उसे भय रहता है कि लडकी बड़ी दिखलाई देगी ——"दूध से मुख धुलाती है, लेकिन पीने को नहीं देती।" [1] रानी के जीवन में यातनायें पीडाएँ और कुँठाएँ इतनी आई कि वह पत्थर होगई ——"मुझे हीन समझकर दीदी और माँ की उतरन दे दी जाती जिस दिन कमलबाबू दीदी को देखने आये मुझे बाहर जाने की मनाह कर दी गई थी। माँ नहीं चाहती थी कि मेरी छाया भी कमल देख पाये। उन्हे डर था कि कहीं काली साली देखकर वह यह न समझे कि कावेरी उनकी बेटी नहीं किसी की माँगे की लडकी दिखला दी है।" [2]

इस प्रकार अपनी ही माँ से असहाय पीड़ा, प्रताडना और धिक्कार रानीने सहा है। उसकी बहन कावेरी बरसते पानी में, शिमला जैसे प्रदेश में, उसे घर से निकाल देती है। रानी यह सब सहन कर अपना आश्रय खोजने में समर्थ हो जाती है। वह अपना खाना अपने ही कमरे में नौकरानी चाँदी से बनवा लेती है। सच कहे तो रानी सहनशीलता की मुर्ति है। उसका हृदय दूसरों के दुःख ~~को दर्द~~ को समझता है वह केवल अपने ही दुःख में मग्न नहीं रहती।

रानी की बुध्दि तेज है, प्रथम वर्ग से लेकर बी.ए. तक की परीक्षा में उसने प्रथम श्रेणी और अपने वर्ग में अव्वल क्रमांक प्राप्त किया है। जिस दिन परिक्षाफल घोषित होता, उस दिन रानी की माँ भी उसकी तारीफ करती। पूरे साल में वही एक ही दिन रानी को अपनी माँ का प्यार मिलता। रानी अपनी इसी बुध्दि के बलपर अपने भविष्य को स्वयं बना पाई।

रानी के कुशाग्र बुध्दि ने जान लिया कि आधुनिकता के नामपर नकली रंगीनी में माँ और दीदी कावेरी रंगी हुई है। वह आगे कहती है ——"मुझे धीरे-धीरे इस नई सभ्यता और नये रहन-सहन से चिढ़ हो गयी, क्योंकि इतन

1] रजनी पनिकर : काली लडकी : पृ. : ६.

2] वही : पृ. : ७

सुखी परिवार तोड डाले थे। मुझे लगता कि कमलबाबू का परिवार भी टूट रहा था। मेरे माता-पिता का परिवार तो टूट ही गया था। नई सभ्यता और नये ढंग के रहन-सहन ने माँ को चका चौंध में डाल दिया था।" [1]

रानी को एम.ए. करवाने के लिए उसकी माँ ने कावेरी के साथ दिल्ली भेज दिया। लेकिन कावेरीने भी एक दिन उसे घर से निकाल दिया। फिर वह पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो गयी , किन्तु उसने उस स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं किया। वह जान गई थी कि यदि एक बार भी इस आधुनिकता की झिल-मिलाती मरीचिका में खो गई तो फिर अपने अस्तित्व का पता नहीं लगेगा। रानी के शब्द में ——— "मेरी दशा भी सुन्दरी शर्मा या प्रेमा जैसी हो जायेगी। कुछ वर्षों तक तो शरिर की उष्णता काम देगी , तब तक जीवन ठीक चलेगा नहीं तो नरक के कीडे सा व्यतीत करना पडेगा।" [2]

रानी बडी स्नेहमयी है। वह अपनी नौकरानी चांदी से भी बहुत प्यार करती है और डाईन जैसी बहन कावेरी की भलाई के लिए कमलबाबू को समझाती है। कमलबाबूने कई स्त्रियों के साथ सम्बन्ध भी रखे थे, किन्तु रानी के स्नेहमयी व्यवहार के समक्ष हार गये। वे कहते हैं———"रानी तुम कितनी स्नेहमयी हो। रानी , तुम सांवली होकर भी इतनी सुन्दर हो।" [3]

रानी स्वाभिमानी है , जब उसकी माँ उसीसे छुटकारा पाने के लिए उसे दिल्ली कावेरी के पास भेजती है तब कावेरी भी कुछ दिनों बाद उसे घर से निकाल देती है , तो वह अपना खर्च स्वयं छोटा-मोटा काम करके चलती है। किन्तु उसने एक दिन भी कमलबाबू या अपने पिता से पैसे नहीं मांगे। तो कमल स्वयं कहते है —— ———"आज तक किसी ने मुझे नहीं चहा। सबको मेरे पैसों का मोह रहा है। रानी, मैं जानता हूँ तुम किस कठिनाई से खर्च चलाती रही हो। तुमने कभी मुझसे रुपये की बात नहीं की। मैं तुम्हारे रहन-सहन में अन्तर देखता रहा हूँ। आज से छः महिने पहले तुम दोनो समय भोजन भी नहीं जुटा पाती थी। तब तुमने बहाना

१] रजनी पनिकर : काली लडकी : पृ. : १२७.

२] वही : पृ. : १२४.

३] वही : पृ. : १३२.

किया कि चांदी बूढ़ी हो गई है, अब मैं उसे और कष्ट नहीं चाहती। वह एक बार भोजन बना ले, हमलोग ? दोनो समय खालेंगी।"[1]

रानी के जीवन में एक ही अभाव है और वह है उसका काली होना। परंतु रानी ने अपनी स्वाभिमानी और स्नेहमयी व्यक्तित्व से अपने कालेपन पर भी विजय पायी है। उसने दिखला दिया कि ----कमलबाबू के शब्द में ---- "नहीं रानी तुम हो, ममता की रानी, प्यार की रानी -- वह केवल गोरी है ---संगमरमर के पत्थर की तरह। उसके पास हृदय नहीं है। अगर है तो उसमें धडकन नहीं।"[2]

"काली लडकी" इस उपन्यास की रानी एक साधारण भारतीय युवति है। उसका जीवन कुण्ठा, यातना और व्यथा से भरा हुआ है। परंतु इन सब पर विजय पाकर उसने अपना भविष्य सफलतापूर्वक सुखमय बना लिया।

अंत में हम कह सकते है कि मनुष्य की सही परख रंग-रूप नहीं हो सकती, बल्कि उसके गुणपर होती है।

रानी की माँ :-

इस उपन्यास में रानी की माँ की भूमिका रानी के जीवन में महत्वपूर्ण है। बच्चे के जीवन में उसकी माँ का बड़ा महत्व रहता है। किन्तु रानी की माँ रानी को अचानक पडनेवाला भार मानती है। रानी के जन्म के समय उन्हे लडके की आशा थी, परंतु लडके के बदले ----------"केवल एक लडकी पाकर, वह भी काली, उनपर गाजगिरी होगी, इसमें किसी को सन्देह नहीं होना चाहिए।"[3]

रानी के जन्मते ही उसे सेविका चांदी के हाथों सौंप दिया गया। माँ ने उसे कभी स्नेह से नहीं देखा। वह कहती है --------"सच पूछो तो मैंने रानी को जीभर कर कभी देखा भी नहीं है --------मुझे उसे बहुत अच्छी तरह देखते डर लगता है। अभागिन इतनी काली है ----- मैं सोचती हूँ किसी देवी का शाप है, जो ऐसी लडकी

१] रजनी पनिकर : काली लडकी : पृ. : १२७.

२] वहीं : पृ. : १२८.

३] वहीं : पृ. : २.

मेरे कोख से पैदा हुई।" [1] रानी काली होने के कारण उसकी माँ उससे अत्यधिक घृणा करती थी।

रानी की माँ एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवार की स्त्री है, जिसे खर्च करने की बहुत आदत है। अपनी इसी खर्चीली आदत के कारण उसने मध्यमवर्गीय पति का घर छोड़ दिया। वह अमीर दामाद के घर जाकर रहने लगी। इसी खर्च करने के शौक ने ही अंत में माँ को बड़ी बहन कावेरी के साथ इंग्लैंड पहुँचा दिया। और उन्होंने वहाँ से अपने पति को तलाक के लिए पत्र लिखा क्योंकि वहाँ एक उसे धनाढ्य विधुर मिल गये थे।

इस प्रकार मध्यमवर्ग में आडम्बर प्रियता किस सीमा तक बढ़कर —कई परिवार तोड रही है। इसका एक ज्वलंत उदाहरण रानी की माँ के माध्यम से रजनीजीने दे दिया है।

कावेरी :-

इस उपन्यास की नायिका की कावेरी बहन है। वह माँ की बहुत प्यारी है, क्योंकि उसका रंग गोरा है। पढ़ने-लिखने में उसका मन नहीं रमता। बी.ए. में असफल होती है तो माँ उसका विवाह एक धनी परिवार के कमल के साथ कर देती है। विवाह के बाद कावेरी और सुन्दर लगती है ———"दीदी का रंग पहले ही चमकता हुआ गोरा था, लगता था अब जैसे उसमें किसीने चन्दन मिला दिया हो। ————————अब तो उनकी आँखों में दीप झिल मीला रहे थे। ————दीदी के घुंघराले बालों में भी ऐसे लगता मानो सितारे टके हो। मैं अपनी बहन के सौंदर्य से स्वयं अभिभूत थी।" [2]

कावेरी पहले तो रानी से कटु व्यवहार करती थी। परंतु विवाह के उपरान्त उसका व्यवहार रानी के प्रति कोमल हो गया। वह रानी को एम.ए. करवाने के लिए दिल्ली साथ ले गयी। इसी बीच कावेरी का झुकाव पति के वफादार मित्र धीरेंद्र की ओर हुआ और उसको रानी और पति के संबन्ध में भी शंका होने लगी।

१] रजनी पनिकर : काली लडकी : पृ. : ११.

२] वहीं : पृ. : १२१.

एक दिन बरसते पानी में उसने रानी को घर से निकाल दिया। और अपनी पुरानी सेविका चांदी को भी पीटा। शंका और घृणा के बीज बढ़ते गये, पति से प्रतिदिन झगड़ा होने लगा। उसकी माँ भी उसके पास दिल्ली आ गयी। माँ बेटिने मिलकर खूब रुपया विदेशी बैंकों में भरा और धीरेंद्र से मिलकर विदेश चली गई। जाने से पहले कावेरीने भी पति से तलाक ले लिया।

धन की लालसा और आधुनिक सभ्यता में बनती-बिगड़ती स्त्रियों का चित्रण करने का सफल प्रयत्न लेखिकाने किया है।

चांदी :-

चांदी रानी के घर की सेविका और रानी को पाल-पोषकर बड़ी करने वाली माँ है। वह ममतामयी और स्नेहमयी नारी है। रानी की माँ रानी को काली जानकर उसे चांदी की गोद में सौंप देती है। जन्म से नहीं किन्तु यथार्थ में चांदी ही रानी की माँ है। रानी निराश होती है तो उसे कहती ——— "रानी बिटिया – तुम बी.ए. पास हो गई हो। अब तुम्हें काहे की चिन्ता, जब चाहो नौकरी कर सकती हो। यह मुन्ने को गोद में ले चाहे किसी और को।"[1]

जब कभी रानी के घरवाले उसे काली कहकर दुःख प्रकट करते कि इससे विवाह कौन करेगा तो चांदी कह उठती————"रानी बिटिया किसी दिन राजा की रानी बनेगी। भाग भरी बड़ी-बड़ी आँखों में कौन अपना भाग्य नहीं खोजना चाहेगा।"[2] सच-मुच चांदी की ही आशिषों से रानी ने अंत में अपने मनचाहे राज को पा लिया। चांदी जीवनभर माँ की ममता, पिता का स्नेह, सेविका की सेवा, रानी पर न्योछावर करती रही।

इस उपन्यास में लेखिकाने और तीन अतिगौण नारी पात्र ले लिए है। जिसके नाम है ——सुन्दरी, सुलोचना और सुनन्दा। केवल कथा विकास के लिए ही रजनीजीने इन्ही पात्रों का विचार किया है। सुन्दरी रानी की बचपन की सखी है, तो सुलोचना उस घर की मालकिन है जहाँ सुन्दरी गवर्नेस का काम करती है। सुनन्दा सुलोचना देवी की बड़ी ननद है। इस प्रकार प्रसंगवश लेखिकाने इन पात्रों को उपन्यास में निर्वाह किया।

---

१) रजनी पनिकर : काली लड़की : पृ. : २६.
२) वहीं : पृ. : ३.

अतः हम कह सकते हैं कि इस उपन्यास में लेखिकाने काली लडकी के चित्रणद्वारा समाज के मनोविज्ञान पर प्रकाश डाला है। और साथ ही साथ आधुनिक सभ्यता और पाश्चात्य संस्कारों से बनती-बिगडती स्त्रियों का चित्रण किया है। इस कार्य में लेखिका को पूरी सफलता मिली है।

६] जाडे की धूप :-

इस उपन्यास में लेखिकाने यौन समस्या को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। और साथ ही साथ आधुनिक शिक्षित नारियों के गुण-दोषों पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। यही रजनीजी की सफलता है।

भारती :-

"जाडे के धूप" उपन्यास की नायिका भारती है। वह एक आधुनिक भारतीय शिक्षित, सुसंस्कृत और आर्थिक रूप से स्वतंत्र है। भारती नौकरी करती है, उसका पति पवन है और घर में उसका पांच साल का बेटा और सास भी रहती है। पति के साथ अनबन रहने के कारण वह टिपू और सास के साथ पति से अलग रहती है। वह बडी संवेदनशील कोमल और कल्पनामयी नारी है। बचपन से वह एक छाया के स्वप्न देखा करती थी। फिर जब जीवन में उसकी भेंट अजय से होती है तो उसे प्रतीत होता है कि वही छाया साकार होकर उसके समक्ष खडी है। वह अजय की ओर खिंचती है। वह अजय के सम्मोहन के आगे ठहर नहीं पाती। वह अजय से कहती है ——————"तुम के सम्बोधन के लिए मैं क्या कहूँ, कोई कितना अच्छा लगा, मुझे उसने कितना भार दिया है। भार का बोझ के रूप में अर्थ न लेना। मेरा तात्पर्य है उस भार से जो फूल लता को देते हैं, जो सुगन्ध समीर को देती है। समझ गए न?" [१]

अजय का प्यार पाकर भारती अधिक संवेदनशील हो जाती है ——— "तुम्हारे स्नेह ने जो दर्द मेरे हृदय में जगाया, मुझे जो राहत बख्शी है, उसने मेरे लिए कोई समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं। वह अजय से ही पूछती है क्या प्रेम

१] रजनी पनिकर : जाडे की धूप : पृ. : १७.

संवेदनशील भी बना देता है।" [1] परंतु इस जीवन का यथार्थ उसे धरतीपर घसीट लाता है। वह पति के प्रति और प्रेमी के प्रति सच्ची बनी रहती है। उसका जीवन बड़ी विचित्र परिस्थिति में फंस जाता है। वह एक पत्र में अजय से कहती है ————"कोई एक बन्धन अनिवार्य हो गया है ——मैंने इसे ढीला करने की कोशिश नहीं की है और न मुझे यह अखरा ही है।" [2]

अजय भारती की बारे में सोचने लगता है कि एक तो वह अपने पति की होकर रहे , या मेरी बनकर रहे। वह साफ शब्दों में भारती को कह देता है कि ————"किसी एक की तो हो जाओ , पवन की होकर रहो , तो मैं अपना रास्ता नाप लूँगा। मेरी होकर रहो तो पलको पर बिठाकर रखूँगा।"[3] किन्तु भारती बड़े ही प्यार से उसे समझा देती है ————"प्राण, मैं तुम्हारी मुस्कान नहीं छीनना चाहती। मेरी इतनी ही साध है कि मेरे प्रेम को तुम गृहस्थी का रूप न देकर जीवन में उन्नति करो।" [4]

भारती लाख आधुनिक नारी है लेकिन अपनी मन की भावनाओं को कुचल डालती है और अजय को एक पत्र में स्थिति की गम्भीरता को स्पष्ट करते हुए लिखती है ————"तुम क्यों नहीं समझते एक विवाहित नारी , इस बदलते हुए युग में यदि अपने विवाह की मर्यादा सुरक्षित नहीं कर पाई है तो इस में दोष समाज का , उसके अपने विशृंखल मन का तथा नई मान्यताओं का है। मैं आदर्श की आढ़ में तुम पर प्रहार नहीं कर रही। सच कह रही हूँ आज के युग में प्रेम का अर्थ "शरीर" पर सीमित नहीं रह गया। सारा पुरुष समुदाय एक और फ्रायड को लेकर उसका स्तुतिगान करे पर नारी सहमत नहीं होगी। शरीर के साथ अभी भी नारी पवित्रता के संसार से अलग नहीं कर सकी है।————नारी स्वेच्छा से शरीर तब देती है जब जीवन की कोई आवश्यकता उसे वैसा करनेपर विवश करती है।" [5]

१] रजनी पनिकर : जाड़े की धूप : पृ. : १९.

२] वही : पृ. : ३३

३] वही : पृ. : ६५

४] वही : पृ. : ६६

५] वही : पृ. : ६६

इसमें भारती का सबल व्यक्तित्व कर्तव्यपरायणता तथा भारतीय परम्परागत आदर्शों के प्रति आस्था प्रगट होती है। वह आधुनिक शिक्षित और प्रगतिशील नारी होकर भी भारतीय संस्कृति की जंजीर में अटकी रहती है।

भारती एक स्वाभिमानी युवति है। घर में सास के आ जाने से या टीपू को देहरादून के स्कूल में भेजने से, पर्याप्त मात्रा में खर्च बढ़ जाता है। तो उसका मन नहीं करता कि पवन को एक रुपया भी माँग सकें। पवन की माँ है ———उनका भी बेटा है, किन्तु उनका खर्च भारती ही सम्भालती है।

भारती में दया और सहानुभूति के गुण भी हैं। उसकी बुआ की बेटी मालती के बच्चों की बिमारी में उसकी पूरी सहायता करती है।

भारती एक आधुनिक भारतीय नारी है, जो अपने ही मन चाहे रास्ते पर चलती है। लेकिन भारतीय नारी संस्कृति और पतिव्रता की सीमाओं की दीवार नहीं तोड सकती। यही [illegible] रजनीजीने भारती के चरित्र के माध्यम से दिखलाने का प्रयास किया है।

<u>मालती :-</u>

यह इस उपन्यास का दूसरा प्रभावशाली नारी पात्र है। मालती इस उपन्यास की नायिका भारती की फुफेरी बहन है, किन्तु दोनों में सगी बहनों सा स्नेह है। मालती की माँ ने ही भारती का लालन-पालन किया है। मालती देखने में सुंदर है, बी.ए. पास है। उसकी माँ ने बड़ी आशाओं के साथ धूम-धाम से मालती का विवाह एक धनवान व्यक्ति से किया था। किन्तु वह एक दिन भी वहाँ प्रसन्नता से नहीं रह सकीं। भारती सोचती है ———"बुआ ने प्रसन्नता को धन में तोलना चहा।"[१]

मालती एक साधारण भारतीय नारी है तो उसकी इच्छा-आकांक्षायें भी साधारण सी है। लेखिका उसके बारे में आगे लिखती है ———"बेचारी मालती। उसकी इच्छा तो साधारण नारी की तरह यहीं तक सीमित है कि पति उसके साथ

१] रजनी पन्निकर : जाडे की धूप : पृ. ५८.

बाहर बाजार से कपडा आदि खरीदने जाएँ, उसे कभी-कभी सिनेमा ले जाएँ। समय पर घर आकर सद्गृहस्थ की तरह शेष समय बच्चों के साथ बिताएँ।" [२] किन्तु मालती के भाग्य में यह सब नही लिखा था। पति रात्रि के दो बजे के पहले कभी घर नहीं आता। केवल कर्तव्य निभाता है परंतु हृदय नहीं दे पाता। पति के ऐसे व्यवहार के कारण मालती में आत्मविश्वास की कमी हो गई। वह साधारण भारतीय नारी के समान पुरुष के सामने सिसकती हुई निःसहाय नारी है।

मालती का जीवन मुस्कराहटों से आरम्भ हुआ था और शूलों में परिणत हो गया। पति का प्यार उसे जीवनभर नहीं मिल सका। परंतु वह एक कर्तव्य-परायण नारी है जो अपना दायित्व जानती है।

उपन्यास में अन्य भी कुछ नारी पात्र है, जिसके नाम का उल्लेख केवल एक या दो बार ही हुआ है। उनमें जया, पेरीन झाबवाला, ... सेठ की लडकी और सेठानी आदि गौण नारी पात्र आते है।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि आधुनिक भारतीय नारी पर कितने भी पाश्चात्य संस्कार हो सके, किन्तु वह अपनी प्राचीन परम्परागत संस्कृति की श्रृंखला को तोड नहीं सकती।

७] एक लडकी-दो रूप :-

इस उपन्यास में माला के दो रूपों की कथा है। माला इस उपन्यास की नायिका है। उसका दूसरा रूप जो उसके मूल रूप से नितान्त भिन्न है। वह उसके अवचेतन या चेतन में ही है और जिसे वह सुविधा के लिए गुडिया कहती है। लेखिकाने एक निम्न-मध्यवर्गीय परिवार की लडकी का चित्रण किया है, जो अपने परिवार का बोझ अपने कंधेपर लेकर चलती है।

माला :-

माला उपन्यास की नायिका है। माला का एक रूप तो परम्परा निभानेवाली आदर्श युवति का है, जो अपने परिवार के भोजन के लिए तीन

१] रजनी पनिकर : जाडे की धूप : पृ. : ३८.

सौ रुपये महावार की नौकरी करती है। वह कभी-कभी अपनी परिस्थिति से उबकर राजू के साथ घूमने-फिरने जाती है। राजू से वह प्यार करती है, किन्तु राजू केवल मनोरंजन के लिए उसके साथ प्यार का अभिनय करता है, क्योंकि वह विवाहित है और दो बच्चियों का पिता है।

माला के मन में प्रति छाया के रूप में एक अवचेतना या चेतना है उसे माला उसका दूसरा रूप या गुड़िया कहती है। गुडिया को चमचमाता हुआ जीवन भाता है और वह जब भी अवसर मिलता है, माला को प्रेरित करती है कि उसे अपना ले। सेठ कन्नौडिया की भेंट माला से होती है तो गुडिया तुरन्त उसे संकेत करती है --
------"क्यों माला क्या ख्याल है ? क्यों न इस अवसर का लाभ उठा जाय ?
"माला क्या करोगी ? चुप बैठो न। तुमने ऐसे व्यक्तियों से संपर्क स्थापित नहीं किया, क्यों अपनी बदनामी कराओगी। क्या और लोगों की बदनामी हो रही है कनौडिया जैसे व्यक्तियों को फांसकर लाभ उठा चुकी है।"[1] इस प्रकार माला का दूसरा रूप गुड़िया, उसे इस संसार के बहते पानी से हाथ धोने के लिए सदैव संकेत करता है।

माला सेठ के यहाँ नौकरी करने लगी — तो समाज उसे सेठानी कहने लगे। कोई सेठ की "रखैल" भी कहते है, जितने मुँह उतनी बातें। माला सुनती और सहती रही। तो सेठ भी उसे एक क्षण के लिए भी छुट्टी नहीं देते क्योंकि उन्हे डर है कि राजू कहीं उसे भड़का न दे। माला कठिन परिश्रम से काम करती है वह त्याग और इच्छाओं का बलिदान अपने परिवार के लिए करती है। परिस्थितियाँ सदैव कभी एक-सी बनी नहीं रहती। पिता को आभूषण बेचने में कैद हो गयी तो सेठजीने जमानत करके रिहा कर दिया। पिताजी घर आकर खुद-खुशी कर लेते है। अब माला का जीवन मोड़ लेता है। वह अपने भीतर की गुड़िया की आवाज बन्द कर देती है। सदा के लिए नौकरी छोडकर घर पर ही बच्चों को पढ़ना आरंभ कर देती है।

माला इस पूरे संघर्ष में राजू को नहीं भूलती। तब भी नहीं, जब राजू उसके पिता की जमानत करवाने के लिए इन्कार कर देता है। उसे बुरा अवश्य लगता

१] रजनी पनिकर : एक लडकी-दो रूप : पृ. : ४०.

है, किन्तु वह सोचती है ———— "शाम को जब सलेटी आसमान और डूबते सूर्य की सलेटी और सिन्दूर लाली का मिलन देखती हूँ तो मेरा हृदय करुणामय हो उठता है। राजू का ख्याल आ जाता है, सोचती हूँ, ठीक तो है, मैंने उसे प्यार किया है। उसमें विशेष बात क्या है ? एक नारी ने एक पुरुष को प्यार किया है।" [1]

माला स्वभाव से कोमल इच्छाओं से भावुक नारी है। किन्तु उसकी किस्मत में सच्चा प्यार नहीं है। राजू की पत्नी है —माधवी। वह माला के साथ घर-गृहस्थी की बात सोच भी नहीं सकता। सेठ भी पैसा के लिए सेक्रेटरी बनाता है। अमित बचपन का साथी है बस। और कुछ नहीं। वह सोचती है ———— "मेरी सारी मान्यताएँ नष्ट हो गई है कि नारी पुरुष की समकक्ष हैं। नारी अपने को लाख इस भ्रम में रखें, समता और समानाधिकारों की दुहाई दें। परंतु वह सब जानती है कि वह आदिम युग की तरह आज भी "भोग्या" है और कुछ नहीं। कम-से-कम पुरुष की दृष्टि उसे इससे अधिक कभी नहीं देखती।" [2]

आधुनिक नारी संघर्ष करती है, वह पुरुष के चंगुल से बचना चाहती है किन्तु वहाँ आकर वह हार जाती है। इसी तथ्य की ओर माला का संकेत है। शारीरिक रूप से स्त्री अबला है। और जब तक हमारे समाज के पुरुषों में स्त्रियों के प्रति आदर नहीं रखा जाता तबतक स्त्री की हार होती रहेगी।

माधवी :-

इस उपन्यास की नायिका माला के बाद माधवी ही प्रभावशाली नारी पात्र है, जो इस कृति का नायक राजू की पत्नी है। माधवी का माला के व्यक्तित्वपर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। माधवी का सामाजिक स्थान है। माला सोचती है ———— "मैं केवल कम्पैनियन हूँ। मुझे राजू ने उन्मेष के क्षणों में भी ठोक बजाकर समझाया है कि माला, आज के युग में पुरुष स्त्री की मित्रता को बुरा नहीं समझा जाता। यदि स्त्री दूसरी स्त्री की मित्र हो सकती है तो पुरुष की मित्र होने में क्या और कौन-सी आपत्ति है ?" [3]

---

१) रजनी पनिकर : एक लड़की-दो रूप : पृ. : ११०.
२) वही : पृ. : ६५.
३) वही : पृ. : २८

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

माला सदैव यही सोचती है कि वह माधवी के साथ अन्याय कर रही है। किन्तु राजु माधवी को भी बहुत चाहता है। माधवी का घर में उच्च स्थान है। राजु को इतना साहस नहीं कि वह माधवी के साथ बने किसी "प्रोग्राम" को रद्द कर माला के साथ घूमने चला जाय।

माधवी का राजु पर वैधानिक अधिकार है। दोनों के हृदय एक न भी हों तो भी वह एक सामाजिक समझौते से बंधे हैं। माधवी अच्छी गृहिणी है, बढ़िया खाना बनाकर खिलाती है। उसका पति उसकी पीठ के पीछे ही माला का है, सामने नहीं। फिर माधवी सौंदर्यमयी है, ——————"गोरा, चौरस हंसता हुआ मुख आत्मसंतोष से जगमगाती आँखें।" [1]

माधवी एक आदर्श पत्नी है, आदर्श गृहिणी है और आदर्श माँ भी है। वह एक भारतीय आदर्श नारी का सर ऊँचा करती है। यही लेखिका की सफलता है।

कथा में अन्य नारी पात्र - माला की माँ, बहन सरोज, राखी फिर भाभी अचला, पडोसिन और सखी उमा, सेठानी सब गौण पात्र हैं और वे उपन्यास की कथा में एक या दो बार आते हैं।

इस उपन्यास में वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में नारी-संस्कारों तथा विवशताओं के अन्तर्द्वन्द्व को चित्रित किया गया है। और वर्तमान समाज का वातावरण तथा समस्याओं की ओर पाठकों का ध्यान केन्द्रित किया गया है। यही रजनीजी की सफलता है।

८] तीन दिन की बात :-

इस कृति में लेखिकाने एक शिक्षित लड़की के जीवन पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। इसमें सिर्फ तीन दिन की कथा का वर्णन है, और यह रजनीजी का घटना-प्रधान उपन्यास है। इसमें दो ही नारी पात्र प्रभावशाली हैं —शशि और संध्या।

शशि :-

इस उपन्यास की नायिका शशि है। वह एक पढ़ी-लिखी तैंतीस-चौंतीस वर्ष की युवति है। वह एक ऊँचे पदपर कार्य कर रही है। उसी के संदर्भ में वह

१] रजनी पनिकर : एक लड़की-दो रूप : पृ. :५४.

एक साक्षात्कार लेने के लिए दिल्ली से कलकत्ता जाती है। कलकत्ते में वह अपने पिता के स्वर्गीय मित्र के यहाँ ठहरती है। उनके तीन बड़े बेटे है अमल, राजू और निर्मल। पिता की मृत्यु के बाद अमल ही उनके कांच की दुकान और घर का कारोबार देखते है। उसे ही शशि के पिताने शशि के बारे में लिखा था ——————"तुम्हारी शशि दी कुछ ज्यादा ही पढ़ी-लिखी है। लड़कियों को इतना पढ़ना अच्छा नहीं होता. पर अब हो क्या सकता है ——————विवाह का नाम लेता हूँ तो खाने को दौड़ती है।" [1]

शशि एक विदुषी महिला है। उनके जीवन में डॉ. तनवीर आये थे। उसे वह अपना कुँआरा प्यार दे बैठी और वह उसके साथ विवाह करना चाहती थी, लेकिन वे पांच बच्चों के पिता निकले। इस धोखें के उपरान्त आयु के पैंतीस वर्ष तक उसका जीवन नीरस, एकाकी और उजाड ही रहा। परंतु वह कलकत्ते में आने के बाद अमल के लम्बे-चौडे व्यक्तित्व के आगे नतमस्तक हो गई। और अमल भी उसके भाव-भरी आँखें देखकर अपना हृदय दे बैठा। अमल के निस्वार्थ, निश्छल प्रेमने शशि का मन जित लिया। अमल अपनी भावनाओं का प्रदर्शन करने के बाद शशि की प्रतिक्रिया जानने को उत्सुक होता है। वह पूछता है ——————"शशि क्या मेरी भावनाओंकी कोई भी प्रतिक्रिया तुमपर नहीं हुई।" [2] क्यों नहीं हुई ! तुमने वैसा मान लिया। निश्छल, निस्वार्थ प्यार बडी मुश्किल से मिलता है। मैं सोचती हूँ पिछले एक दिन में हमने बहुत लंबा सफर तय कर लिया है। इतना करने के लिए कई वर्ष लग जाते हैं।

तीन दिन में ही शशि अमल के साथ जुड़ गई है। उसे अमल का घर भरा-भरा और अच्छा लगता है। अपने घर की याद स्मृतिनाश्रेहो उसके मन में भय उत्पन्न हो जाता है। शशि ——"दिल्ली के अपने घर को बात भूल गई, जहाँ हर समय सन्नाटा छाया रहता है, जहाँ कभी कभी अपने एकाकीपन से ऊबकर वह भोजन भी नहीं करती।" [3]

१] रजनी पनिकर : तीन दिन की बात : पृ. : १.

२] वहीं : पृ. : १७२.

३] वहीं : पृ. : १८९.

इस प्रकार शशि एक विदुषी महिला है जो विलायत भी हो आई है। वह एक उच्चपदपर कार्य कर रही है, किन्तु फिर भी नारी है। नारी स्वभाववश उसे भी पुरुष का प्यार और सामीप्य की लालसा आकर्षित करती है। वह प्यार और स्नेह ले दे सकने में समर्थ है, शुष्क एवं नीरस नहीं है। शशि सौम्य, सुन्दर तथा सुघड़ व्यक्तित्व की स्वामिनी है।

उपन्यास के अंत में संध्या और बुलू मिलकर शशि को काफी में जहर दे देती है। शशि आधा प्याला पीकर ही विरत हो जाती है, किन्तु डाक्टरों के सामायिक उपचार से उसका जीवन बच जाता है। उसी बीच उसके पिता भी आ जाते है, और गौरादेवी के कहनेपर शशि का हाथ अमल के हाथों सौंप देते हैं। यही कथा "तीन दिन की बात" उपन्यास में नायिका शशि की है।

संध्या :-

इस कृति में यह दूसरा प्रभावशाली नारी पात्र है। वह अमल की पडोसन है, और वह अमल से प्रेम करती है। अमल इस बात से अनभिज्ञ नहीं है, किन्तु दोनों में कभी बातचीत नहीं हुई। अमल के घर शशि आती है, तो वह शशि के व्यक्तित्व से अभिभूत हो उठता है। अमल का शशि की ओर झुकना संध्या से छिपा नहीं रहता। वह ईर्ष्या से पागल हो जाती है और अमल के घर की सेविका बुलू के साथ मिलकर शशि को काफी में जहर देती है। शशि बच जाती है और बुलू व संध्या का रहस्य खुल जाता है।

संध्या मन-ही-मन कुढ़नेवाली डायन है जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को जान तक ले सकती है।

इस कृति में और भी कुछ नारी पात्र है लेकिन उन पात्रों का कोई प्रभाव नहीं दिखाई देता। उनमें गौरादेवी, बुलू और ललिता आते है।

अंत में हम कह सकते है कि रजनीजीने अति-शिक्षित नारियों का विवाह एक समस्या बन सकती है। इसका दिग्दर्शन करने की कोशिश की है।

१] **महानगर की मीता :-**

इस उपन्यास में लेखिकाने नारी के जीवन में तलाक की समस्या एक विद्रोही और कुंठावादी समझकर लिखा है। उनका यह पहला कदम है, कि जो मीता [नारी] प्रेमविवाह करके पति के पढ़ाई में सहायता दे देती है, और वहीं पति उसे तलाक दे देता है। इन्हीं समस्याओं को लेकर यह उपन्यास आगे बढ़ता है।

मीता :-

मीता इस उपन्यास की नायिका है, जो परंपरा की पुत्री है परन्तु परंपरा से मुक्त है। वह प्रेम विवाह करती है किन्तु सफल नहीं हो पाती। मीता स्वाभिमानी नारी है। उसे अपने पति का पर स्त्री गमन और स्वयं के साथ अवहेलनापूर्ण वर्तन सहा नहीं जाता। उसे भी अपना अहम् प्यारा है। जिस पति को उसने नौकरी करके डॉक्टरी पढ़ाई है, वही उससे तलाक चाहता है, मुक्ति चाहता है। तो मीता जबदस्ती से उसके साथ कैसे रह सकती ? वह कहती है —— "मेरा जीवन भी अजीब है। मेरा जैसा जीवन, जैसे अनाडी के हाथों में जीवन का प्लाट खराब कर दिया गया हो।"[१] किन्तु उसका स्वाभिमान और साहस उस खराब हुए प्लाट को फिर अच्छी तरह संवारने के लिए बाध्य कर देता है। वह पिता के घर लौट आती है। बीते दिनों के बारे में उसके मन में खयाल आता है कि ——————"मैं इतिहास पढ़ नहीं रही थी —मैं इतिहास बना रही थी।"[२] फिर उसका मन कह उठता है कि ————"बीमारी को लेकर पूरी जिन्दगी बिता देना कहाँ की अक्लमंदी है। बीमारी को छोडकर आगे बढ़ना ही ठीक है।"[३] और वह यथार्थ में ही उस बीमारी को छोडकर आगे बढ़ती है।

मीता के कोमल आत्मा को परम्परा से मिले संस्कार रह-रहकर छलनी करते

१] रजनी पनिकर : महानगर की मीता : पृ. : ९.

२] वहीं : पृ. : ४.

३] वहीं : पृ. : १२.

है। वह अजित की तस्वीर चुपके से देखती है और मन-ही-मन सोचती है, समानाधिकार पाकर भी नारी सहारा ढूँढ़ती है, क्यों? शायद सदियों से पुरुष की दासता का फल है। उसके हृदय में नारी मन की सभी सुलभ भावनायें हैं। फिर भी उसमें आत्मविश्वास और स्वाभिमान है। वह समाज कार्य में हिस्सा लेती। महिला संस्थाओं में जाकर उनके कार्य में मन लगाती है क्योंकि अपना दुःख भूल सकें। तलाक कह देना सुलभ है लेकिन पा लेना या दे देना कठिन है। अजित को उसने डॉक्टरी पढ़ाई थी उसका ख्याल आते ही उसका मन ग्लानि से भर उठता है कि एहसान के बदले क्या प्रेम पाऊँगी। उसे अजित के स्वार्थी मन पर चिढ़ आती है। वह अपनी सखी स्नेह से भी इस बारे में बात करती है। तब स्नेह भी उसे यही कहती है ----------"अरे पगली आज के जमाने में यह कैसी बातें करती हैं। तुम्हें कौन भला मानस समझकर मानेगा। तुम मूर्ख हो महामूर्ख। आज भाई बन्धु वही है जो तुम्हारे रोजगार में काम आ सकते हैं।" [1]

परंतु मीता स्वार्थी नहीं है, उसमें मनुष्यता और उदारता है। वह अपने पति तथा सखी और उसके पति से भी जी भर के प्यार करती है। वह प्यार की देवता है, लेकिन अजित जब उसको अवहेलना करके तलाक की माँग करता है, तब मीता का स्वाभिमान उसे पति के आगे झुकने से रोकता है, वह निर्णय लेती है ---------------"मैं इस बीसवीं सदी में सीता नहीं बन सकूँगी। क्या अजित राम है? वह सब कुछ होते हुए मर्यादा के लिए अभाव में तड़पते रहे यह सब कुछ होते हुए भी उसको ठुकरा कर अधिक के लालच में तड़प रहा है। उसे तलाक चाहिए, मैं दूँगी उसे तलाक।" [2]

ऐसी हालत में सोयी ^मीता एक स्वप्न देखती है। एक नारी शीशे में उसके प्रतिबिम्ब से बात करने लगी है। उसके एक हाथ में तिरंगा है, तो दूसरे हाथ में तेज-धार चाकू है जो खून से सना है। जैसे ----------"देख रही हो, यह खून की तेज धारा। यह तुम्हारी असंख्य बहनों की विवशता का खून है। क्या तुम चाहती हो कि तुम भारतीय नारी को और परवश बनाओ।"

१] रजनी पनिकर : महानगर की मीता : पृ. :३८.

२] वहीं : पृ. : ५६.

"नहीं, दबा घुटा मेरा स्वर निकला।"

"तो तुम डरती किस बात से हो ?"

"लोग लाज से।"

वह नारी हँस पड़ी। क्या हम केवल दूसरों को दिखलाने के लिए अपना जीवन जीते हैं या स्वयं अपने लिए जीते हैं ?" [1]

इस प्रकार मीता ने परम्परा से मिले संस्कार का लिहाज़ उतारकर फेंक दिया। वह नारी जाति के लिए नवीन स्वतंत्रता का नारा लेकर अपने मार्गपर बहुत आगे बढ़ गई। वह सोचने लगी कि आधुनिकता केवल दिखावे के लिए नहीं है, उसे यथार्थ में लाना चाहिए। वह सोचती है, पुरुष की कानून का लाभ उठा सकते है। नारियाँ क्यों नहीं ? तो मीता आगे कहती है ————"हमारा देश अभी पिछड़ा हुआ है, तलाक पुरुष के लिए उचित है —स्त्री लेकर तो कलंकिनी मानी जाती है———पुरुष ले तो विजयी और शूरवीर। उसकी पीठ ठोंककर लोग कहते हैं, शाबाश अच्छा हुआ तूने जोरू की गुलामी नहीं सही।" [2]

मीता नारी स्वतंत्रता की साक्षात प्रतिमा है। वह इन परिस्थितियों से विद्रोह करती है और पति को तलाक देकर अपनी पुरानी बीमारी को ठोककर नये सिरे से जीवन आरम्भ करती है।

स्नेह :-

इस कृति में स्नेह का कार्य माया के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। स्नेह डाक्टर टण्डन की पत्नी है। उसका नाम ही स्नेह नहीं, बल्कि वह यथार्थ में ही स्नेहमयी है। मीता अपना सुख-दुःख उससे कहती तो स्नेह सदैव हित सामने रखकर सलाह देती है। मीता लखनऊ से अपने पिता के पास कलकत्ता जाती है तो स्नेह उसे पत्र भेजकर फौरन बुलाती है। और वह मीता को अस्पताल में नई आनेवाली डॉक्टर के बारे में कहती है। मीताने घबराकर पूछा मैं क्या करूँ ? तो स्नेह कहती है ————"शांति से काम लो। सब सहती जाओ। नारी सहने के लिए ही पैदा होती है।" [3]

१] रजनी पनिकर : महानगर की मीता : पृ. : ५८.

२] वही : पृ. : १५२.

३] वही : पृ. : ४७.

स्नेह ने सदैव यह चाहा कि मीता का घर टूटने से बच जाए। [illegible] टूटने से बच जाए। वह मीता की हितैषी है। छोटी-सी बात होती तो भी मीता उसे बुला लेती। स्नेह अपने घर का काम-काज भूलकर दौड़ी चली आती।

स्नेहने भी विवाह के आरम्भ में अपने पति की अवहेलना की थी किन्तु उसका घर टूटने से बच गया। वह चाहती है, कि मीता और अजित सुख से रहें। इसीलिए उसे समझाती भी है ——————"मनुष्य सहृदयता की सब बातें भूल जाओ। हर स्थिति में मुस्कराना सीखो। जिस करवट अजित बैठाए उसी करवट बैठना सीखो, नहीं, मनमानी का फल तुम्हें भुगतना न पड़ जाए।" [१]

स्नेह मित्रता निभाना जानती है। वह अजित और मीता के टूटे सम्बन्ध को जुड़ाने की बहुत कोशिश करती है। किन्तु जब वह कलकत्ता आती है, तब मेजर प्रबीर की ओर मीता का झुकाव देखती है। फिर भी वह अपनी सखी को धर्म निभाना सिखाती है। मीता के मन में संघर्ष चल रहा है, वह नींद की गोलियाँ खाकर सो जाती है। स्नेह उन दिनों मीता के बच्ची की देखभाल करती है।

अंत में हम कह सकते है कि स्नेह कोमल भावात्मक, हँसमुख और कर्तव्य परायण नारी है।

<u>श्रीमती अधिकारी :-</u>

श्रीमती अधिकारी कलकत्ता की बहुत बड़ी बिजनेस फर्म की मालिक है। उनके पति बहुत अमीर है। उसने अपनी पत्नी ऐश्वर्य के कारण ऊब न जायें इसीलिए उसे फर्म की मालिक बनाया है, और उसी फर्म में एक अच्छा-सा आफिस भी है। इसी आफिस से श्रीमती अधिकारी समाज सेवा करती है और समाज सेवी संस्थाओं का कार्यभार सँभालती है।

श्रीमती अरुणा अधिकारी वैसे तो आयु में पचास के आसपास की है लेकिन बनती संवरती ऐसी है मानो अभी तीस-पैंतीस की ही हो। उनका बड़ा बोल-बाला है। उनका उठना बैठना केवल प्रांतीय और केन्द्रीय मंत्रियों तथा उच्चाधिकारियों के

१] रजनी पनिकर : महानगर की मीता : पृ. :३२.

साथ होता है ———"मीता से मिलकर श्रीमती अधिकारी बहुत प्रसन्न होती है कहती है, वाह! खूब, आओ मीता मुझे तुम जैसी लडकी से मिलकर बड़ी खुशी हुई। मेरी बधाई स्वीकार करो। मेरी शेफाली भी बेचारी तुम्हारी जैसी स्थिति में है। तुम्हारी तो पहली बार है। शेफाली की दूसरी बार। पुअर अनलकी गर्ल। माई स्वीट डार्लिंग।" [१]

श्रीमती अधिकारी से मिलकर मीता बहुत प्रसन्न हुई कि समाज का कोई भाग ऐसा भी है, जहाँ नारी तलाक को स्वाभाविक समझा जाता है। श्रीमती अधिकारी अपनी संस्थाओं के द्वारा ऐसी तलाक-शुदा लडकियों के लिए दूसरी बार शादी करवाके उनके जीवन में प्रसन्नता प्रदान करती है। मीता को देखकर [illegible] उन्होंने अपने सेक्रेटरी घोष को आदेश दिया ———"घोष, मीता का एक बढ़िया-सा इन्टरव्यू छाप दो। दो तीन पत्रों में छोटा राइट अप भी प्रकाशित करवा दो। सब अखबारों के लिए फोटो अलग-अलग रहें। समझ गए! लिखा होगा ——नारी स्वतंत्रता की महान समर्थक ——नारी शोषण के विरुध्द आवाज उठानेवाली, बीसवीं सदी की झाँसी की रानी। पहली वाली झाँसी की रानी स्वतंत्रता के लिए लडी थी, यह झाँसी की रानी नारी की व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए लड़ने को कटिबध्द है। नारी शोषण के विरुध्द इन्होंने अपना छोटासा जीवन होम कर दिया है।"[२]

इस प्रकार श्रीमती अधिकारी अपने ही ढंग से महिलाओं को हर प्रकार की सहायता करती है। वह महिला समाज की सच्ची हितैषिणी है।

अंत में हम कह सकते है कि इस उपन्यास में लेखिकाने नारी स्वतंत्रता की ओर संकेत किया है। आधुनिक भारतीय तलाकशुदा-नारी फिर से विवाह कर अपना जीवन सुखी करें, यही रजनीजी का उद्देश्य रहा है।

१०) सोनाली दी :-

इस उपन्यास में रजनीजीने एक अठारह वर्ष की लडकी के जीवनपर प्रकाश डाला है, जो माँ न होने के कारण आधुनिक परिवेश के संस्कारों के कारण बिगड़ती जा रही है। और पाश्चात्य संस्कारों का लिबाज पहनकर रहने लगी है।

१] रजनी पनिकर : महानगर की मीता : पृ. : ७७.
२] वहीं : पृ. : ७८.

उसे संवारने-सुधारने के लिए उनके पिता एक "गार्जियन ट्युटर" रखते है। इसी कृति में दो ही नारी पात्र प्रभावशाली है, एक सोनाली और दूसरा रानू।

सोनाली :-

"सोनाली दी " इस उपन्यास की नायिका सोनाली है। वह शिमला की रहनेवाली बंगाली युवति है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वह अपने मामा के यहाँ कलकत्ता आती है। लेकिन मामा उसे अपनी विदेशी पत्नी के सामने पहचानकर भी पहचानने से इन्कार कर देते है। सोनाली शिक्षित युवति है। अत: वह नौकरी के तलाश में रहती है, तो उसे श्री जीवनदास के यहाँ उनकी ग्रेजुएट लड़की रानू की देख-रेख का काम करने लगती है। साथ ही घर-गृहस्थी भी देखती है। घर में जीवनदास की बेटी रानू, जीवनदास और उनकी बूढ़ी काकी माँ रहती है।

इस प्रकार सोनाली का जीवनदास के यहाँ नौकरी का प्रारंभ होता है, तो जीवनदास उसे उनके काम-काज के बारे में बताते हुए कहते है ———"आपको रानू के साथ-साथ रहना होगा, इसको सलाह देनी होगी कि कौन-सी वेश-भूषा पहने, कहाँ जाए-आए और कहाँ नहीं जाए बड़ो के सामने कैसे बोले, कैसे बातचीत करे। भारतीय नारी के लिए उचित ढंग कैसा होता है, आपको इसे यही सिखलाना है।"१

सोनाली अपना पूरा साहस बटोरकर इस कार्य को संपन्न करने में जुट जाती है वह रानू जैसी आधुनिक युवा और पढ़ी-लिखी रईस पिता की बेटी का मन जीतने में कामयाब हो जाती है। वह कुछ ही दिनों में रानू का विश्वास ही नहीं, उसका आदर और प्रेम भी पा लेती है।

सोनाली आयु में इतनी बड़ी नहीं है कि वह रानू जैसी लड़की को माँ की ममता और प्रेम दे सकें। लेकिन वह अपने तेज बुध्दि से रानू का मन जीत लेती है। सोनाली दिखने में सुन्दर और सौम्य व्यक्तित्व की युवति है। जीवनदास की बूढ़ी

१] रजनी पनिकर : सोनाली दी : पृ. : १२.

काकी उसे जीवनदास की बहू समझती है। रानू की माँ नहीं है, दस वर्ष पहले ही उसकी मृत्यु हो चुकी है। किन्तु बूढ़ी काकी उसका बहू के अतिरिक्त अन्य कोई सम्बन्ध सोच भी नहीं सकती। सोनाली की सूनी माँग देखकर हट पड़ती है ——————"बहू, मैं भोजन नहीं करूँगी। तुमने सिन्दूर नहीं लगाया। राम, राम, क्या अनर्थ है, कौन इस घर का भोजन करेगा।"[1] बूढ़ी काकी क्रोध से काँप रही और बिना भोजन करके उठने लगी। तब सोनाली सोचा की यह भी एक नौकरी का अंग है। उसने पड़ोस से चुटकीभर सिन्दूर लाकर माँग में लगा लिया। तब ————"सोनाली के मन में आ रहा था कि अपने कमरे में जाकर खूब रोये। भारतीय नारी के जीवन में सिन्दूर का कितना महत्व है। कुंवारी लड़की और माँग में सिन्दूर ! सिन्दूर !! उसकी माँ देखे तो क्या कहे ! ——————जिसके नाम का सिन्दूर है, ——————कहीं वह सोनाली को गलत न समझ ले। ——————वह नौकरी के पहले दिन ही नौकरी नहीं खोना चाहती।"[2]

सोनाली बुद्धिमान है, मन में द्वन्द्व लिए हुए भी वह विवश है क्योंकि नौकरी बनायें रखने के कारण वह ऐसा शीघ्र निर्णय नहीं ले लेती है। सोनाली वैसे तो आधुनिक पढ़ी-लिखी युवति है। वह संगीत भी जानती है। लेकिन भारतीय नारी के संस्कार उसे विरासत में ही मिले थे। इसी कारण उसने नम्रता और सेवाभावी वृत्ति अपनायी है। नौकरी में तो केवल रानू की देख-रेख की शर्त थी। किन्तु वह काकी माँ और जीवनदास दोनों को भी देख-भाल करती है। जीवनदास जो कभी घर दोपहर को खाने के लिए नहीं आते थे, अब प्रतिदिन आने लगे हैं। इस लिए भी सोनाली अपने हाथ से परोसती है। काकी माँ की तो दिनरात सेवा करती है। वह भी मरने से पहले केवल "बहू-बहू" रटते मर जाती है।

सोनाली की सेवा-भावी वृत्ती और शरिर की सुघड़ता देखकर जीवनदास अपना मन खो देते हैं और उसे अपनी सहचारिणी बनाकर सदैव के लिए घर में रहने

१] रजनी पनिकर : सोनाली दी : पृ. : २०

२] वही : पृ. : २१.

का अनुरोध करते है। जीवनदास का साथी महिम भी उतनी बड़ी आयु में सोनाली को देखकर गृहस्थी बनाने को सोचता है। ————"महिम देखता रहा। सोनाली के व्यक्तित्व में एक "डिगनिटी" है, यानी सौम्यता है, जिसकी इज्जत की जा सकती है।"[1]

सोनाली में एक सलिका है, कोमलता है, माधुर्य और गभीरता भी है। सोनाली गृहिणी बन सकती है और स्टेजपर भी जा सकती है। सोनाली का चरित्र-चित्रण एक सफल नायिका के रूप में लेखिकाने किया है।

रानू :-

रानू अठारह वर्ष की आधुनिक लड़की है। उनकी बी.ए. की पढ़ाई जारी है। रानू एक रईस पिता की अकेली संतान है। उनके पिता "नई रोशनी" के सम्पादक है। बचपन में ही उसकी माँ की मृत्यु हो गई है। तब से वह घर में अकेली स्वच्छन्द व निर्भिक रहती आई है। वह "बोटनिक" कहे जानेवाले लोगों के साथ कभी-कभी घूमती है। तो जीवनदास सोनाली सेनागुप्ता को उनकी देख-रेख के लिए रख देते है; तो वह अपने पिता से पूछती है ——— "आखिर पापा आज दस वर्षों बाद मुझे साथिन की आवश्यकता कैसे पड़ गई?"[2]

रानू डायरी लिखती है। वह महिन के साथ बचपन से रही है। महिन उनके पिता के मित्र है। रानू से आयु से महिम बीस साल बड़े है लेकिन उनके लम्बे-चौडे शरिर को देखकर रानू खुश रहती है उसे मन-ही-मन पूजती है। रानू के इन्द्रजीत, कैजल, नील और अरुण मित्र मंडल है, और इरा और शेफाली दो लड़कियाँ भी है। रानू को इन लोगों के साथ होटलों में जाना, पार्टी देना अच्छा लगता है। इस पार्टियों में बियर और डांस भी होता है। फिर भी रानू में परंपरा के बीज है, वह अपनी सखी इरा से कहती है ————"इरा, तुम कितनी भी मॉडर्न क्यों न बनो, प्रेम और विवाह का थोडासा संबंध अपने देश में अभी भी है।"[3]

---

१) रजनी पनिकर : सोनाली दी : पृ. : १२७.

२) वही : पृ. : ८.

३) वही : पृ. : ३.

इस प्रकार आज की स्थिति से रानू अनभिज्ञ नहीं है। वह अपने सौभाग्य के प्रति भी सतर्क है। वह कहती है ———"मैं जानती हूँ कि बहुत कम ऐसे बंगाली परिवार है जहाँ लड़कियों की इतनी देख-रेख की जाती है। प्राय: बेचारी उस बेल की तरह बढ़ती चली जाती हैं जिसे कभी-कभी माली पानी देता है ——————पिछले कुछ वर्षों से देख रही हूँ लड़कियाँ को पढ़ा-लिखाकर पिता उनसे काम करवाते है, पैसा कमवाते है। रेखा दी, शेफाली दी, दोनों समय कमाती है, पर भेजती है।" [1]

सोनाली दी के संस्कारों के कारण रानू में संसार को समझने की बुद्धि आती है, और उनके विचारों में भी परिपक्वता तथा समाज को परखने की बुद्धि आती है। महिम दा के प्रेम का आचरण कितना झीना है, यह वह समझ गई और कथा के अंत में उसका झुकाव इन्द्रजीत की ओर हो जाता है। रानू युवा पीढ़ि का सजीव चित्र है।

ममता :-

"सोनाली दी" इस उपन्यास में जीवनदास के परम मित्र महिम की छोटी बहन ममता एक विधवा स्त्री है, जो आयु से तीस-बत्तीस की है। जीवनदास की पत्नी रूपाली के मृत्यु के उपरान्त परोक्ष रूप में वह उनके परिवार का शासन चलाती है, परन्तु सोनाली नौकरानी बनकर इस घर में आने के बाद ममता के कार्य में विघ्न आने लगे। जीवनदास भी सोनाली की तरफ झुकने लगे, तो स्वाभाविक था कि ममता सोनाली से इर्ष्या करने लगी। ऐसे में ममता की बाते तेज होने लगी ———"जैसे टकसाल से निकले हुए चमकदार सिक्के होते हैं। वह मौका पड़नेपर विषय को दिलचस्प बनाना जानती है। यह भी जानती है कि बात को कहाँ-कहाँ से कैसे सजाया जाता है। आखिर कथा लिखती है, तो कुछ-न-कुछ तो करेगी।" [2]

---

१) रजनी पनिकर : सोनाली दी : पृ. : ७६.

२) वही : पृ. : ८६.

ममता देखने में सुन्दर थी , लेकिन वैधव्य ने उसे संयम सिखा दिया। वह जीवनदास को मन-ही-मन पूजती थी। फिर भी लाख कोशिश करके वह जीवन को अपना नहीं बना पाई। सोनालीने आते ही जैसे जीवनदास को उससे छीन लिया ।

इस उपन्यास में ममता एक ईर्ष्यालु,आदर्शवादी , असफल विधवा नारी पात्र है।

<u>बूढ़ी काकी :-</u>

जीवनदास के घर में उनकी बूढ़ी काकी माँ भी रहती है। वह सोनाली को घर की बहू मानती है। वह हिन्दू लड़की सोनाली देखकर को देखकर मन-ही-मन सोचती है।------------"माथे पर बड़ा सिन्दूर का टीका लगाती है। हाथ में सोने का एक-एक कंगन। उन्होने बेबाक पूछ लिया --------"क्यों रे बहू लाया है ? मुझे बतलाया भी नहीं"।" [1]

काकी माँ जिद्दी महिला है। वह सोनाली को सूनी माँग देखकर भोजन नहीं करती। जब सोनाली सिन्दूर लगाती , तभी वह खाना खाती है। सोनाली की भरी-पूरी माँग देखकर जीवन के भी मन में उसके प्रति आकर्षकता प्रगट होती है।

इस प्रकार काकी माँ का जीवन और सोनाली को निकट लाने में बहुत बड़ा सहयोग है। ममता तो कहती भी है ---------"सोनाली का खूबसूरत चेहरा देखकर बुढ़िया का मन लग गया है।" [2]

काकी माँ लग-भग तीन दिन बीमार पड़ गईं । वह बार-बार सोनाली का ही नाम रटने लगी। उसने सोनाली को एक क्षण भी बिस्तर से दूर जाने नहीं दिया। मरने से पहले उन्हे होश आ गया था। वह बोली थी -------"बहू तुम कहाँ चली जाती हो। तुम्हारी प्रतिक्षा में तो मेरी जान अभी तक नहीं गई। अब तुम आ गई हो तो मैं भी भगवान के पास सुख से जाऊँगी। मेरे "जीतू" की देख भाल अच्छी तरह करना ----मुझे वचन दो।" [3]

१] रजनी पनिकर : सोनाली दी : पृ. : ११.
२] वही : पृ. : ६२.
३] वही : पृ. : ११९ .

इस प्रकार अनजाने में ही काकी माँ सोनाली और जीवन को बाँध गई। उनका इस उपन्यास की कथापर पर्याप्त प्रभाव है। वह एक परम्परागत, हिन्दू, नारी है।

इस उपन्यास में लेखिकाने आधुनिक बनती-बिगड़ती लड़कियाँ और बनती-संवरती युवतियाँ दोनोंपर प्रकाश डालने का सफल सायास किया है। और साथ-ही साथ महानगरों की सभ्यता का जीता-जागता चित्र राजू और उनके मित्र मंडल के माध्यम से उपस्थित किया है। यही रजनीजी की सफलता है।

११] बदलते रंग :-

श्रीमती रजनीजीने इस उपन्यास में समाज के प्रत्येक पहलू के बदलते रंग पर दृष्टि डाली है। हमारे यहाँ का धनवान या अभिजात वर्ग किस प्रकार सच्ची शिक्षा से दूर रहकर और भ्रमों में पड़कर अपने आपको खो देता है, और पश्चिमी सभ्यता अपनाने में ही जीवन का चरमोत्कर्ष समझता है। यही उन्होंने आशा, श्रीमती रूपकुमारी चौधरी, रोशन गुलाबवाला, शिवाचरी और असावरी इन नारी पात्रों के माध्यम से दिखाया है।

आशा :-

आशा इस उपन्यास की नायिका है। वह एक गरीब लड़की है। उसका बचपन और फिर पढ़ाई लिखाई अत्यंत अभावों और कष्टों की छत्र-छाया में बिता गया है। फिर भी उसकी निर्धनता ने उसे पंगु नहीं बनाया। आशा दिखने में सुन्दर थी, लेकिन अपने रूप का घमण्ड उसे नहीं था। विवाह के विषय में राघवन जब उसे पूछता है, तब यही प्रश्न उसे तीर के समान दिल को चुभता है। फिर भी वह सहज भाव से हँसकर कह देती है ———— "माँ ने मेरी पढ़ाई के लिए कुछ कर्ज लिया था, जो उसे चुका दे, उसी से।

राघवन ———कितना कर्ज ?

"आशा निर्भीकता से पूछ लेती है, क्या आप चुकाएँगे ?"
" तो अवसर मिलनेपर चुका सकता हूँ।"
"रूप का बड़ा घमण्ड है !"

"नहीं केवल आत्मसम्मान की भावनासे कह रही हूँ।" १

१] रजनी पनिकर : बदलते रंग : पृ.: १९.

आशा अनिंद्य सुन्दरी है तथा, सोसायटी, कालिज सभी स्थानोंपर उसके रूप की चर्चा है। वह दूसरों का वैभव देखती है। पर दूसरों बल्कि कभी ईर्ष्या नहीं करती। उसका स्वभाव निष्कपट और निश्छल है। आर्थिक परिस्थितियों ने आशा को बड़ा ही भावुक और संवेदनशील बना दिया है। उसके पास अंतर्दृष्टि है, दूसरों के मनोभावों को सहज समझ सकती है। दुःख सहते-सहते माने वह समजदार हो गई है ——— "गरीब लडकियों को भगवान एक अंतर्दृष्टि प्रधान करता है। —बुद्धि की आँख।"[1] अपनी उन्हीं आँखों से वह विवेक चौधरी के परिवार को परख लेती है।

आशा, विवेक चौधरी के घर अध्यापिका है। उस घर में उनकी सौतेली माँ और सौतेली दो बहनें रहती हैं। वह सभी गृहकार्य भी करती हैं। रूप चौधरी धीरे-धीरे स्वयं घर-गृहस्थी का सारा बोझ आशापर ही सौंप देती है, क्योंकि उन्हें आधुनिका बनने की चिंता है। आशा का रूप और घर-गृहस्थी का साज-शृंगार देखकर विवेक चौधरी मन-ही-मन सोचता है। ———"आशा इस घर की सदस्या बन जाए तो कितनी मुश्किलों का हल हो जाए। समय पर भोजन बन जाए। लडकियों को सलीका आ जाए। बहुत से अनावश्यक खर्च घट जाएँ। बहुत से अनावश्यक खर्च घट जाएँ, और सबसे बड़ी है, इस सुंदर से घर में चाँदनी का सा उजियारा बन रहे।"[2]

सच कहाँ जाए तो – आशा गरीब है किन्तु उसमें स्वाभिमान की कमी नहीं है। वह रूपवती है किन्तु रूपगर्विता नहीं है। वह सहज, सरल, निश्छल, निर्भीक रमणी है। जो अपने पाँव पर खड़ी होकर धनोपार्जन कर सकती है और उतनी ही कुशलता से गृहकार्य भी निपटा सकती है।

श्रीमती रूपकुमारी चौधरी :-

"बदलते रंग" इस उपन्यास में यह एक प्रभावशाली महिला पात्र है। आशा उसी के घर में अध्यापिका बनकर जाती है। श्रीमती चौधरी आशा के साथ मालकिन और नौकर का व्यवहार करती है। परंतु जब उन्हे पता चलता है कि आशा नगर के [illegible] डिप्टी कमिशनर को भली-भाँति जानती है, तो वह उनका आदर करती है। वह एक

१] रजनी पनिकर : बदलते रंग : पृ. : १३.

२] वहीं : पृ. : ९९.

अतृप्त विधवा नारी है। उसके पिताने पैसों के लिए बड़े घर में उसकी शादी कर दी थी। अपने पति चौधरी साहब के साथ उनकी अनबन रहती। वह स्वयं अपनी डायरी में एक स्थानपर लिखती है ———"प्रेम का बावन रिश्ता जो आत्मीयता का रिश्ता है, मुझ में और उसमें बन ही नहीं पाया, पनप ही नहीं पाया। मैं प्रेम के वशीभूत हो जाना चाहती हूँ। वह प्रेम कहाँ से लाऊँ।"[1]

श्रीमती चौधरी को पति का प्यार नहीं मिलता सिर्फ धन मिला है। वह किसी और पुरुषों के साथ प्रेम करना चाहती है, और अपने ही आप से पुछ बैठती है ——— —"क्यों मैं किसी और से प्रेम करूँगी। वह तो पर पुरुष प्रेम होगा ?"[2] फिर आगे जाकर डायरी में वह यह भी लिखती है ———"मुझे तरसने से नफरत है। आजकल मैं केवल तरसती हूँ। छि:-छि: मैं कितनी पागल हूँ, भला कोई ऐसी बातों के लिए भी तरसता है।"[3]

श्रीमती चौधरी अपने बुढ़े पति की मृत्यु के उपरान्त अपने ही सौतेले बेटे विवेक को वासना की दृष्टि से देखती है, और फिर वह अपने से ही घृणा करती है। उसके पिता के कृत्यों का बदला सौतेले बेटे से प्रेम करके ही लेना चाहती है। वह आशा के घर आ जाने के उपरान्त बदल जाती है। आशा उसकी भेंट राघवनऔर रोशन गुलाबवाला के साथ करवाती है। रोशन गुलाबवाला पुरानी मुर्तियों का व्यापारी है। कला सीखाने की और भीतरी सजावट सीखाने की तथा आधुनिक बनने की धुन सब में सवार होती है। वह अपने कोमल केशों को कटवा देती है। और धीरे-धीरे पुरुषों से फटों होटलों में जाकर सिगरेट और शराब पीना आरम्भ कर देती है। अन्त में एक स्मग्लर्स के जाल में फँस जाती है। जहाँ से उसका सौतेला बेटा विवेक बड़ी कठिनाई से उसे छुड़ाकर घर ले आता है। श्रीमती रूप कुमारी चौधरी में स्वार्थ की भावना अधिक है। वह केवल अपने लिए ही सदैव सोचती है। आधुनिक बनने के लालच में उसे अपनी दोनों बेटियों का ख्याल ही नहीं रहता।

केवल पैसों के लिए कुछ लोग बेटियों को बुढ़े और धनवान लोगों के हाथ सौंप देते है। फिर चाहे अपनी बेटी का जीवन बर्बाद हो जाए। श्रीमती रूपकुमारी चौधरी के चरित्र दारा लेखिका ने समाज की इसी कुप्रथापर प्रहार किया है, यी लेखिका की सफलता है।

1] रजनी पनिकर : बदलते रंग : पृ. : १२८.
2] वही : पृ. : १२८.
3] वही : पृ. : ३९.

रोशन गुलाबवाला :-

यह एक काम-काजी महिला का चित्रण है। इसके चरित्र में पश्चिमी संस्कृति का आदर्श मिलता है। वह एक ऐन्टिक स्मगलर्स के गिरोह की सदस्या है। पैसों के लिए जीवन भी दे सकती है। बड़ी धूर्त, चालाक और जाल में फसानेवाली महिला है।

आज इस बदलते हुए परिवेश में पैसों के लिए कुकर्म करनेवाली बहुत है। उनमें रोशन का नाम आता है। उनका प्रथम पति से तलाक हो गया है। इसीलिए उन्होंने विनोद के साथ दूसरा विवाह किया है। रोशन इधर-उधर से कोई वस्तुएँ जुटा लेती है, और विनोद "ऐन्टिक पैलेस" में उन वस्तुओं को बेचता है। रोशन ने एक कला मंदिर भी खोल रखा है, जिसमें वह अपने शिष्यों को शिक्षा देती है। वह स्वयं श्रीमती चौधरी से एक स्थानपर कहती है ——————"जपान के बड़े उद्योगपति की लड़की शांन्ति निकेतन मेरी शिक्षा पाने आई थी। डिग्री लेने के बाद यहाँ बड़ा कोर्स करके गई है। लगभग तीन महीने रही थी।" [1]

रोशन "सुसभ्य," "सुसंस्कृत" महिला को जब हिरासत में ले ली गई तो आशा के मुँह से अनायास निकल जाता है ————"संस्कृति की खाल ओढ़कर क्या सांप ही बैठे रहते है।" [2]

रोशन के चरित्र में महिलाओं की चोरियों के गिरोह में भाग लेना, समाज के विपरीत संस्थाओं में अग्रणी रहना आदि बातों का बड़ा ही यथार्थ तथा विस्तृत चित्रण मिलता है।

इस उपन्यास में कथा की अंत तक उत्सुकता ही बनी रहती है। रजनीजीने आधुनिक भारतीय समाज में विशेषता महानगरिय उच्च-मध्यवर्ग की नारियों के बदलते पहलुओं की ओर अपनी दृष्टि डाल दी है। और उनका जीता-जागता वर्णन इस उपन्यास में किया है।

१] रजनी पनिकर : बदलते रंग : पृ. : ५३.

२] वही : पृ. : १६३.

१२] दूरियाँ :-

नमिता और चारु इन सखियों का संवाद ही "दूरियाँ" उपन्यास की कथा है। ये दोनों नारी शिक्षित है।

नमिता :-

इस उपन्यास की नायिका नमिता है। वह एक सम्पन्न पिता की बेटी है। कालिज में उसका प्रो. हरी के साथ प्रेम हो जाता है। नमिता ने अपने पिता, भाई और माँ से विरोधकर हरी का दामन पकड़ लिया था। लेकिन तीन वर्षों से हरी के साथ रहकर भी उससे विवाह कर अपनी घर गृहस्थी नहीं बना पायी। वह सोचती है ———"ये क्रान्तियाँ अपने हाथ में थीं। नमिता सहाय की जगह नमिता शर्मा लिखना उसके अपने हाथ में नहीं था और हरी एक ऐसा आदमी था जो न तो पत्नीत्व दे सकता था न मातृत्व, क्योंकि वह शादी-शुदा और एक बच्चे का बाप था।"[१]

फिर भी नमिता हरी का साथ नहीं छोड़ती। क्योंकि घर छुट गया समाज में बदनामी हो गयी इसी-लिए वह सोचती है, कि पत्नी नहीं तो प्रेमिका सही। नमिता की ऐसी हालत देखकर उसकी सखी चारु कभी-कभी नमिता को डाँटती भी है। जैसे ———"हरी में ऐसी कौनसी बात है कि उसके लिए तूने इतना बवाल खड़ा किया ?"[२] चारु की व्यंग्य की बात वह हँसी-खुशी से टाल देती है। वह अपने हरी को सुखी करने के लिए दो-दो नौकरियाँ करती है। सुबह का स्कूल, दोपहर में एक फर्म का हिसाब-किताब लिखना। नमिता में निस्वार्थ भाव और सहनशीलता दिखाई देती है। हरी के घर उनकी विधवा बहन और उनके पाँच बच्चे रहते हैं। उन सभी का पालन-पोषण हरी के लिए कठिन है, इसलिए वह हरी के कन्धें से से कन्धा लगाकर अपने संसार में जुट गयी है।

नमिता में उदारता की भावना दिखाई देती है, उसे अनूठी सृजन-शक्ति भगवानने दी है। वह कभी-कभी अपने पत्नीत्व का अधिकार हरी से माँगती है।

१] रजनी पनिकर : दूरियाँ : पृ. : ११.
२] वहीं : पृ. : ११.

इसी बीच वह गर्भवती रहती है। उन दिनों हरी विभागीय कार्य से मद्रास जाता है। नमिता ने फैसला किया है कि हरी की राय लेकर ही कुछ करेगी ———"हरी अगर राजी होता तो कुंआरी माँ बनने में भी नमिता को कोई एतराज नहीं था।" [1]

नमिता मित्रता निभाना भी जानती है। उसे अपनी बचपन की सखी चारु के प्रति बहुत प्रेम है। उसके बारे में हरी के मुँह से कुछ भला-बुरा सुनती तो वह हरी से मुँहतोड जवाब दे देती है। क्योंकि वह जानती है, कि चारु को यश के गम ने पागल कर दिया है। इसलिए वह मन चाहे रास्तेपर चलती है। चारु का ऐसा बुरा वर्तन और हरी के साथ उसका मिलना-जुलना देखकर नमिता के मन में शंकाएँ उठती हैं। जब नमिता चारु को इस बात के बारे में कह देती है, तब चारु उसे कहती है ———"तू मुझे इतना गिरा हुआ समझने लगी है ? ———तुझे और हरी को मैंने हमेशा एक समझा है। तुम्हारे पास रहूं या हरी के पास, मुझे एक सुकून मिलता है। ——— एक सुन्दर-सुनहरा अतीत है, तुम लोगों से मिलकर हरा हो जाता है ——— तुम्हें मंजूर नहीं है। ———सोच लूँगी जिन्दगी का यह अध्याय भी खत्म हुआ, नमिता मेरी एक दोस्त थी जो ———नमिता का हाथ चारु के हाथपर आ गया। "स्वारी ———चारु !" [2]

हरी के साथ नमिता की कुछ अनबन हो जाती है। वह नारियाँ समाज की सेविका शिलाजी के पास चली जाती है। शिलाजी उसे हरी का बच्चा ला देती है, क्योंकि नीरज की माँ दूसरा विवाह कर रही है। कथा के अंत में नमिता और हरी दोनों मिल जाते हैं। और बच्चे को साथ लेकर घर लौटते हैं।

अंत में हम कह सकते हैं कि नमिता के विचार भारतीय संस्कारों में क्रांति लानेवाले है। एक आदर्श नारी का चित्रण लेखिकाने बड़ी कुशलतासे किया है।

चारु :-

इस उपन्यास की नायिका नमिता की सखी चारु है। यह एक इस उपन्यास का महत्वपूर्ण और प्रभावशाली पात्र है। जिसके बिना "दूरियाँ" की कथा अधुरी है।

१] रजनी पनिकर : दूरियाँ : पृ. : ६५.
२] वहीं : पृ. : ८८.

वह एक आधुनिक पाश्चात्य संस्कारों से ग्रस्त युवति है। उसका अपने बचपन के साथी यश से प्रेममग्न होने के कारण वह पहाड़ी नदी की तरह सामाजिक रीति-निषेधों को तोड़ती हुई आगे बढ़ती है। उसे पुरुषों से परहेज है। वह पुरुषों के साथ घूम-फिर सकती है और शारिरीक संबंध भी रखती है। शारिरीक पवित्रता के लिए उसका कहना है——————"उसकी जिंदगी अपनी है। उसका शरीर अपना है। पवित्रता की सीमा क्या सिर्फ शरीर के दायरे में बाँधी जाती है ?" [1]

चारु ने सतर्क रहना छोड दिया, क्योंकि यश के साथ उसने विवाह के सुनहरे सपने सजाए थे, वहीं चूर-चूर हो गये। इसी कारण चारु यश के बाद अनेक पुरुषों के साथ संबंध रखने लगी। परन्तु उसे कोई भी अपनी गृहणी नहीं बना सका। वह जानती है, समाज अपने को बुरा कहता है किन्तु वह अपने मन का क्या करें ? जिसे ————"दूर-दूर तक कोई छांह नहीं, पानी नहीं, कोई हमसफर नहीं जिससे दोन बातें को जाएँ। कोई रास्ता नहीं जिसे मन को कही जाए। फिर सतर्कता क्यों ? किसलिए ?"[2] .

चारु स्वाभिमानी युवति है। उसकी माँ और यश के पिता जब उसे यश के साथ विवाह करने के लिए कहते है, तब चारु स्पष्ट रूपसे बोलती है, मुझे यश के साथ शादी नहीं करनी है। तब उसकी माँ कहती है ————"भावुक होने का वक्त नहीं है बेटी, यह तेरी जिंदगी का सवाल है। तू उसे पति रूप में मान चुकी है।" तेरे भविष्य का क्या होगा ?"[3] तो चारु भी उसे टकासा जवाब दे देती है। वह कहती है कि तेरी (माँ की)बात मान भी लूँ तो मेरी इज्जत का सवाल है।

चारु के मन में स्वाभिमान, दया और सहानुभूति है। उसे अपनी सखी नमिता बहुत मानती है। नमिता का विश्वास ही उसे जीने की प्रेरणा देता आया है। वह कहती है —— -"दुनिया तुम्हें कुछ भी कहे, जरा भी न समझे नमिता

---

१) रजनी पनिकर : दूरियाँ : पृ. : ५१.

२) वहीं : पृ. : ५१.

३) वहीं : पृ. : ३०.

तुम्हें जानती है, समझती है। दिन ये भी गुजर जाएँगे लेकिन अब बात यहीं खत्म नहीं होगी, नमिता को आगे और सहना होगा।"[1]

चारु यश के साथ बंधने से पहले और बाद में भी "मॉडलिंग" का काम करती है। वह सब कुछ छोडने को तैयार थी, लेकिन यश को नहीं छोड सकती थी। उसे यश की धोखाबाजी ने जीवनभर प्रतिक्षा के भँवर में डाल दिया। वह कथा के अंत में यही प्रतिक्षा खत्मकर विजय के साथ विवाह करती है।

<u>शीलाजी :-</u>

शीलाजी एक समाजसेवी संस्था चलाती है, जो विधवा नारी को सहायता देती है। हरी और नमिता में अनबन होने के कारण जब वह दोनों अलग रहने लगते है, तब नमिता शीलाजी के पास रहती है। शीलाजी एक सच्ची समाज सेविका है। वह बार-बार नमिता को हरी के पास जाने की सलाह देती है, किन्तु वह नहीं मानती। अंतमें नमिता का [illegible] आकर्षण सुरेश की ओर बढ़ते देखती है, तो उसे कहती है ————"ध्यान से सुनो। तुम्हारे हरी की पत्नी सुशुक्ला से मेरी रिश्तेदार है यानी मेरी मौसेरी ननद है।—————और एक मेजर से विवाह करने जा रही है। तलाक का मुकदमा तो बहुत दिनों से चल ही रहा था।"[2]

इस प्रकार वह समझ गयी थी कि हरी और नमिता का मनमुटाव अधूरा है। निमी हरी को भूल नहीं पाई। शीलाजीने एक टूटता हुआ घर बसाया। इस प्रकार वह एक अपने जीवन में समाज सेवा करती है।

अंत में हम कह सकते है कि स्त्री माँ बनकर ही पूर्ण है नहीं तो अधूरी है। यह दिखाने का प्रयास रजनीजीने नमिता के माध्यम से इस उपन्यास में किया है। और पाश्चात्य संस्कारों से ग्रस्त नारी का भी वर्णन इस कथा में लेखिकाने किया है।

---

१) रजनी पनिकर : दूरियाँ : पृ. : ३०.

२) वही : पृ. : १७९.

निष्कर्ष :-

हिन्दी साहित्य को नई दिशा देनेवाले कथाकारों में रजनी जी का स्थान विशिष्ठ है। उन्होंने हिन्दी उपन्यास साहित्य जगत में अपने उपन्यास साहित्य द्वारा नारी जीवन का उद्दार और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागृत करने का प्रयत्न किया है। रजनी जी की लेखनी ने आधुनिक समाज को और उस समाज में निर्मित समस्याओं [illegible] को झकझोर ने का प्रयास किया है। विशेषकर नारी समस्याओं की ओर उनकी दृष्टि अधिक रही है। उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी का वर्णन बड़े ही कुशलता से किया है।

रजनी जी के प्रथम उपन्यास "ठोकर" में जुही, मृणाल और नीलू है। जुही एक निम्न-मध्यवर्गीय आदर्शवादी लडकी है। जो अपने सौंदर्य और दिमाग के बलपर ही अटल को हसिल कर अपना भविष्य सुखी बनाती है। और अटल के साथ समाज कार्यों में हिस्सा लेती है। इस कथा में मृणाल, अटल की बहन है और जुही की सखी। उनका स्वभाव इर्ष्यालू, धनलोलुप और गर्व से भरा हुआ है। इसी कारण वह सुंदर होकर भी अधुरी है। बसन्त जैसा नोकर बेटा भी इसी कारण उनका प्यार स्वीकार नहीं करता। "नीलू" इस कथा में एक मरिच के रूप में आती है।

"पानी की दीवार" इस कथा में नीना और करुणा दो ही नारी पात्र है। नीना अपने बचपन का साथी राज की मंगेतर है लेकिन जब वह नोकरी के लिए शिमला जाती है तब अपने सहकारी मित्र प्रो. दिलीप से प्रेम करने लगती है। तो वह राज और दिलीप की तुलना करके मन-ही-मन टूट जाती है। करुणा उसी दिलीप की पत्नी है। वह अपने पति से साथ निभाने की चेष्टा करती है। तो अंत में [illegible] राज की उसी कालिज में प्रिंसिपल के पद पर नियुक्ति होती है और दिलीप प्राधानाध्यापक न बनने के कारण वहाँ से चला जाता है। तो नीना का मानसिक द्वन्द्व अपने आप हल हो जाता है।

"मोम के मोती" में माया की मुख्य कथा है जो नोकरी पेशा नारी है। माया नोकरी करती है तो वह समाज के नजरों में गिर जाती है। उन्हें सेठ की "रखैल" भी कहते है। लेकिन माया यह सब सहकर अपनी बहन की शादी और भाई को विलायत भेजने का खर्च स्वयं नोकरी करके चलाती है। इस कथा में माया की माँ, बहन छाया, कला, चम्पा, रेमिस और बिन्द्या आदि नारी पात्र है, लेकिन उनका कोई कथा पर प्रभाव नहीं दिखाई देता। रजनी जी ने अपने समय की नोकरी पेशा नारी की ज्वलंत समस्या का चित्रण किया है।

"प्यासे बादल" में रोजशीला, बेला और कान्ता आदि नारी पात्र है। इस कथा में भिखारी वर्ग की नारियाँ भी किस-तरह सुसंस्कृत, सुसभ्य और आदर्शवादी बनती है यह कथा की नायिका शीला के माध्यम से रजनी जी ने दिखाने की कोशिश की है। शीला को जयंत अपने घर में आश्रय देता है तो उन दोनों में प्रेम होता है लेकिन पत्नीत्व देने में जयंत असमर्थ है। क्योंकि उनका बेला से विवाह होता है। कान्ता जयंत की दूर के रिश्ते की बहन है।

"काली लडकी" इस उपन्यास में रानी, रानी की माँ, कावेरी और चाँदी आदि नारियाँ आती है। "रानी" काली-कलूटी है तो उसकी अपनी माँ और बहन भी उसकी अवहेला करती है और कुरूप लडकी को किस-किस मुश्किलों से टकराना पडता है इसका सजीव वर्णन इस कथा में लेखिका ने किया है। आधुनिक सभ्यता और तलाक समस्या को भी कावेरी और उसकी माँ के माध्यम हल करने का प्रयास किया है। चाँदी एक आदर्श भारतीय संस्कारों में पली नारी है जो रानी के घर नौकरानी है और रानी के जीवन में सबसे बडा सहयोग देती है।

"जाडे की धूप" में भारती और मालती दो ही नारी पात्र है। भारती एक शादी-शुदा नारी है, जो अपने पति होते हुए भी प्रेमी अजय की साथ निभाने की चेष्टा करती है। लेकिन वह पति और प्रेमी दोनों की ओर पूरी सफाई और इमानदारी से अपना कर्तव्य निभाना चाहती है। और स्वयं इन्ही के बीच पिस-पिस कर टूट जाती है। और अंत में वह पति की ही बनी रहती है, क्योंकि भारतीय नारी कितनी भी आधुनिक क्यों न हो वह अपनी संस्कृति की दीवार तोड नहीं सकती। मालती के माध्यम से भारतीय नारी कल की तरह आज भी किस तरह अभागन है यह दिखाने की कोशिश लेखिकाने की है।

"एक लडकी दो रूप" में माला और माधवी दो ही नारियाँ है। यह उपन्यास दहेज समस्या को लेकर चलता है। माला [illegible] की शादी थोडा दहेज देखकर कट जाने के कारण वह सामाजिक बंधनो की बेडियाँ काट कर अपने ही तय किये रास्तेपर चलती है। उसके अंतर्मन में और एक गुडिया निर्माण होती है। उस गुडिया को लेखिकाने ने माला का दूसरा रूप माना है।

"तीन दिन की बात" इस उपन्यास में शशि, संध्या, कुसू, गौरादेवी और ललीता आदि नारी पात्र आते है। लेकिन शशि और संध्या दो ही पात्र महत्वपूर्ण है। शशि इस कथा की नायिका है जो तैंतीस-चौतीस वर्ष की अविवाहीत युवति है। वह एक साक्षात्कर लेने दिल्ली से कलकत्ता [illegible] जाती है और वहाँ अपने पिता के स्वर्गीय दोस्त

के घर ठहरती है। उस घर का मालिक अमल है, उससे पडोस की संध्या प्यार करती है, और शशि आने के बाद अमल शशि से प्रेम करने लगता है। तो संध्या और कुसु मिलकर शशि को काफी में जहर दे देती है। यह सिर्फ तीन दिन की कथा का वर्णन लेखिकाने सफलतासे इस उपन्यास में किया है।

"महानगर की मीता" इस कृति मे मीता, स्नेह और श्रीमती अधिकारी आदि नारी पात्र आते है। इस उपन्यास की नायिका मीता प्रेम विवाह करती है और अपने पति अजित को पढ़ाई में मदद करके उन्हे डॉक्टर बनाती है वही अजित उससे तलाक लेता है और विदेशी लडकी डॉ. ग्रेसी से शादी करना चाहता है तो मीता टूट-टूट जाती है। स्नेह मीता की सखी है तो श्रीमती अधिकारी एक महिला समाजसेवा संस्थाओं की अध्यक्षा है वह मीता की दूसरी शादी करना चाहती है। वह विधवा विवाह की प्रवर्तक है। इस कथा में तलाक समस्या का वर्णन सफलतासे किया है।

"सोनाली दी" में सोनाली, रानू, ममता और छुटी काकी आदि नारी पात्र आते है। सोनाली एक"गार्जियन टयूटर" बनकर जीवनदास के घर आती है और वह एक आधुनिक संस्कृति से ग्रस्त लडकी रानू जो जीवन की बेटी है, उन्हे सही रास्तेपर चलना सिखाती है और अंत में वह जीवन की सहचारणी बनती है। छुटीकाकी इस कार्य में बहुत सहयोग देती है। ममता जीवन के दोस्त महिम की विधवा बहन है वह भी जीवन को चाहती है, लेकिन सोनाली के आने से वह उस कार्य में असफल ठहरती है। इस कथा में रानू आधुनिक युवतिका प्रतिक है तो सोनाली भारतीय आदर्श नारी का।

"बदलते रंग" इस उपन्यास में आशा, श्रीमती चौधरी, स्नेह तथा श्रीमती चौधरी की दो बेटियाँ और रोशन गुलाबवाला आदि नारी पात्र आते है। लेकिन आशा और श्रीमती चौधरी दो ही पात्र प्रभाव शाली है। श्रीमती चौधरी एक अमीर विधवा नारी है और उन्हे दोन बेटियाँ है। उन बेटियों को पढाने के लिए आशा की नियुक्ति होती है। आशा को श्रीमती चौधरी के घर के बदलते पहलूओं के रंग अच्छे नहीं लगते। लेकिन नौकरी निभाने के लिए वह सब सहती है, और कभी-कभी विरोध भी करती है। इन बदलते पहलूओं का वर्णन करने में लेखिका को सफलता मिल चुकी है।

"दूरियाँ" इस उपन्यास की कथा में नमिता, चारु और शीला आदि नारी पात्र आते है। नमिता इस कथा की नायिका है, वह प्रो. हरी के साथ शादी किये बिना रहती है। और वह हरी के बच्चे की कुँआरी माँ बनना चाहती है। तो चारु एक

आधुनिक पश्चिमी संस्कारों से ग्रस्त युवति है । वह अपना प्रेम भंग होने के कारण पहाड़ी नदी की तरह सभी बंधनों को तोड़कर हर एक के साथ संबंध रखती है और खुले आम उनके साथ घूम-फिर सकती है लेकिन कथा के अंत में वह विजय के साथ शादी करके अपना घर बसा लेती है तो हरी भी अपनी पत्नी से तलाक लेकर नमिता के साथ शादी करता है। इस कथा में शीला एक समाज सेवी महिला है। अंत में इतनाही कहना उचित है कि भारतीय नारी पश्चिमी संस्कारों से कितनी भी ग्रस्त हो लेकिन वह भारतीय संस्कृति की शृंखला तोड नहीं सकती। यही लेखिका की सफलता है।

अंत में हम इतनाही कह सकते हैं कि रजनी जी की नारी त्यागमयी है फिर भी जागृत है। आधुनिक है फिर भी मर्यादित है। वह शिक्षित है, उच्छृंखल नहीं। वे सचेत है किन्तु एक आस्था से जुडी है। आशावादी है, निराशावादी नहीं। उसकी नारी भारतीय संस्कृति और परिवेश के भीतर रहकर नारी जाति के लिए पुरुष के समान अधिकार की माँग करती है।

x-x-x-x-x
xx-x-x-x
x-x-x
x-x
x